SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

रश्मि

37-38वाँ संयुक्तांक

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

कार्यालय - महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

महाराष्ट्र, नागपुर

राजभाषा नियम, 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा - क, ख, ग में परिभाषित किया गया है।

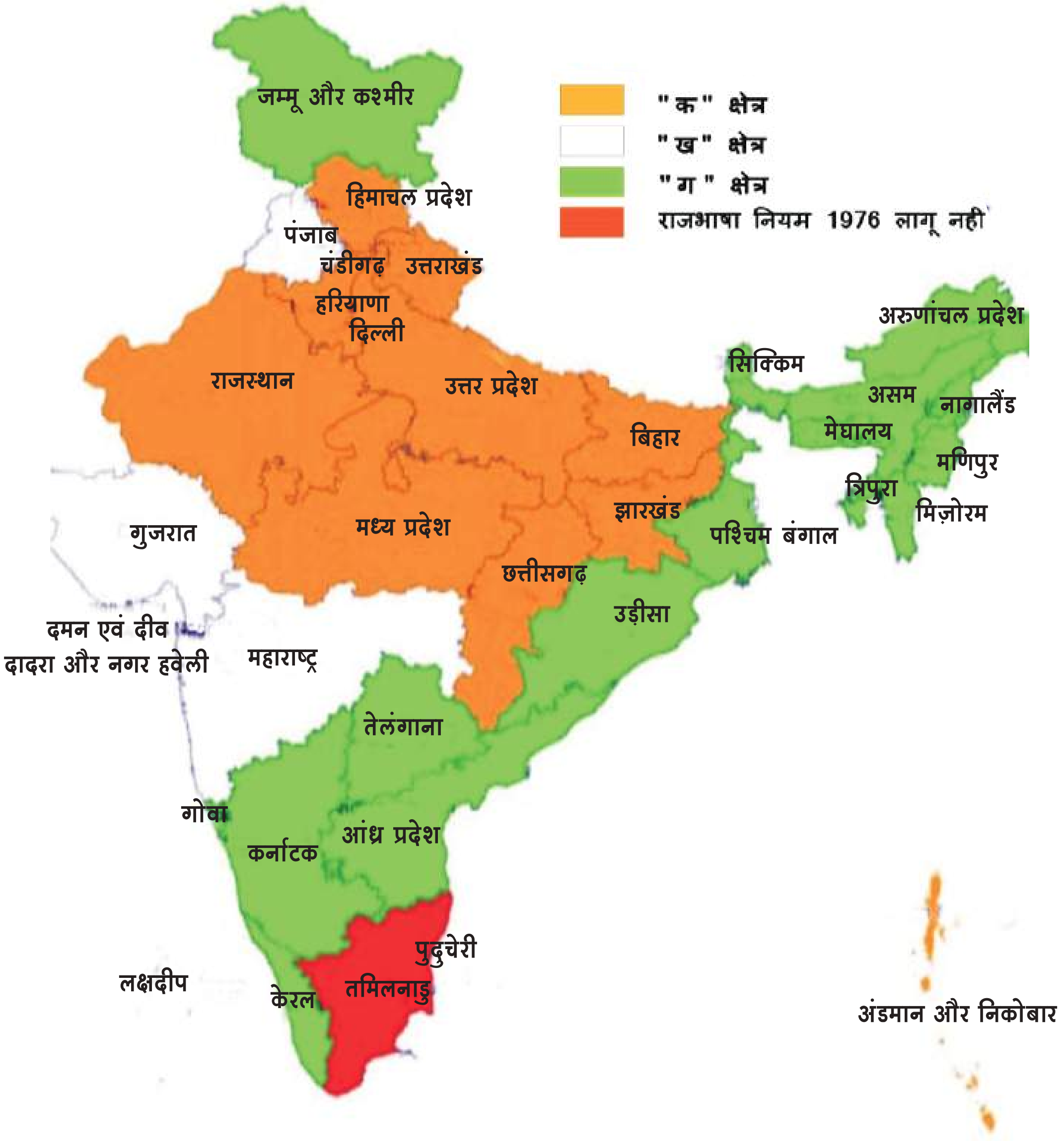

भाषा क्षेत्र	राज्य/संघ राज्य
'क'	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड़, राज्स्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य हैं।
'ख'	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र
'ग'	उपरोक्त निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र

रश्मि

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
महाराष्ट्र, नागपुर

रश्मि परिवार

• मुख्य संरक्षक •

श्री दत्तप्रसाद शिरसाट
महालेखाकार

• संरक्षक •

श्री दिनेश एच. माटे
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

• संपादक •

डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

• सह-संपादक •

श्री. राजेश कुमार कटरे
वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री. नयना कुमार इस्सर
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री. यशी श्रीवास्तव
कनिष्ठ अनुवादक

अस्वीकरण : पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं, उनसे कार्यालय / संपादक मंडल अथवा प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। उनसे उत्पन्न किसी भी वाद की जिम्मेदारी रश्मि परिवार अस्वीकार करता है।

महालेखाकार का संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि हमारी कार्यालयीन गृह पत्रिका 'रश्मि' के 37-38 वें संयुक्तांक का प्रकाशन होने जा रहा है। हिंदी भाषा हमारे देश की समृद्ध संस्कृति एवं संस्कारों का न केवल प्रतिबिंब है अपितु राजभाषा के रूप में हिंदी राष्ट्रीय स्वाभिमान और सांस्कृतिक गौरव का प्रतिनिधित्व भी करती है। प्रत्येक सरकारी कर्मचारी का यह दायित्व है कि वह अपना अधिकाधिक सरकारी कार्य राजभाषा हिंदी में करें।

''रश्मि'' पत्रिका के माध्यम से हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी भावनाओं, विचारों एवं अनुभूतियों को प्रकट करने हेतु एक मंच की प्राप्ति हुई है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारी पत्रिका ''रश्मि''का यह नवीनतम अंक कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को निखारने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी सहायक सिद्ध होगी।

आशा है कि भविष्य में भी हम सभी इसी प्रकार राजभाषा हिंदी को कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक प्रयोग करके राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान बढ़ाते रहेंगे। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु समस्त रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ संप्रेषित करता हूँ।

दत्तप्रसाद शिरसाट

दत्तप्रसाद शिरसाट
महालेखाकार

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश

हमारे कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका 'रश्मि' के 37-38 वें संयुक्तांक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु इस कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सफल प्रयास से कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग में निरंतर प्रगति हो रही है।

राजभाषा गृह पत्रिका 'रश्मि' के इस नूतन अंक में प्रकाशित सभी रचनाएं काफी सराहनीय हैं। इस अंक में सम्मिलित सभी लेख, कविताएँ एवं अन्य रुचिकर सामाग्री जहाँ एक ओर कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक, कल्पनात्मक एवं साहित्यिक रुचि को उजागर करती है, वहीं दूसरी ओर उनके राजभाषा के प्रति लगाव एवं समर्पण के भाव को भी परिलक्षित करती है। मुझे उम्मीद है कि कार्यालय में हिंदी के प्रयोग में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी एवं राजभाषा कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग द्वारा सभी निर्धारित लक्ष्य सहजता से प्राप्त किए जाते रहेंगे।

अंत में मैं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल को बधाई देता हूँ। साथ ही भविष्य में भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'रश्मि' के प्रकाशन हेतु इसी प्रकार सहभागिता की कामना करता हूँ। सभी पाठकों से अनुरोध है कि इस पत्रिका के संदर्भ में वे अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएं।

दिनेश एच. माटे
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादकीय ...

प्रिय पाठकों,

नमस्कार, हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'रश्मि' का नवीनतम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। रश्मि के इस संयुक्तांक (37-38 वें) के माध्यम से अपने भावों को व्यक्त करते हुए मुझे बेहद प्रसन्नता हो रही है।

भाषा किसी भी व्यक्ति, समाज और देश के विकास में प्रमुख भूमिका निभाती है। अतः राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए राजभाषा का विकास अत्यंत आवश्यक है। हिंदी हमारी राजभाषा है जो राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का कार्य करती है। आज हिंदी का वर्चस्व लगभग हर क्षेत्र में देखा जा सकता है। निश्चित तौर पर हमारा कार्यालय भी राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यालयीन हिंदी पत्रिका न केवल एक सशक्त माध्यम है बल्कि कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के हिंदी प्रेम का प्रतीक भी है। पत्रिका पदाधिकारियों की रचनात्मक प्रतिभा को उभारने व कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित भी करती है। साथ ही, कार्यालय की वार्षिक गतिविधियों को परिलक्षित भी करती है।

मैं 'रश्मि परिवार' के माध्यम से उन सभी साथियों का आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से पत्रिका के प्रकाशन में बहुमूल्य योगदान किया है। मुझे आशा है कि हमारी पत्रिका को और अधिक रोचक एवं रचनात्मक बनाने के लिए आगे भी अपना सहयोग देते रहेंगे।

रश्मि पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हिंदी अनुभाग के पदाधिकारियों एवं सभी रचनाकारों का धन्यवाद और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए ढेरों शुभकामनाएँ।

प्रियंका

डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख / कविता		पृष्ठ क्र.
1.	सफलता की परिभाषा	श्री प्रशांत कुमार साहु	1
2.	आस्था, इतिहास और संस्कृति का पवित्र संगम : कुंभ	डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी	3
3.	मेरे और मेरे प्रिय मित्र पर्यावरण के बीच एक संवाद	सुश्री किरण देवी	6
4.	माँ का दर्द	सुश्री रिंकू सिन्हा	7
5.	मैं और मेरे पिताजी	श्री विजय गणपतराव डंभारे	9
6.	जय श्रीकृष्ण	श्री बालकृष्ण अडामे	10
7.	हरदम यूँ ना ऊपर देखें	श्री विजय इस्सर वत्स	10
8.	हे सृष्टि	श्री राजेश कुमार कटरे	11
9.	मीडिया, बाजार और उपभोक्तावाद का क्षेत्र त्रिकोण	श्री मोहम्मद अवेश अंसारी	12
10.	हिंदी दिवस	श्री संदीप बुटोलिया	13
11.	नागद्वार यात्रा	श्री अभय अ. सराफ	14
12.	भारत की खोज......??	श्री रवि प्रिंस	18
13.	क्या कोई होगा?	सुश्री नीना वर्मा	23
14.	रास्ते में अकेला	श्री रविन्द्र आर. ब्राम्हणकर	23
15.	सुविचार (संकलन)	श्री मंगेश टोंगो	24
16.	बचपन	सौ. प्रिती रविन्द्र ब्राम्हणकर	26
17.	धर्म की श्रेष्ठता	श्री यशांक अडामे	26
18.	छोरी	सुश्री यशी श्रीवास्तव	27
19.	आत्मनिर्भर भारत	सुश्री नयना कुमारी इस्सर	29
20.	कार्यालय में आयोजित हिंदी पखवाड़ा-2024		31
21.	कार्यालय में आयोजित ऑडिट दिवस-2024		33
22.	कार्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक		35
23.	कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला		36

सफलता की परिभाषा

श्री प्रशांत कुमार साहु
लेखापरीक्षक

सफलता की परिभाषा क्या है? जब चाहत सिर्फ सपने में नहीं बल्कि हकीकत में हो। क्या सफलता मिलने के बाद जीवन में सफलता की इच्छा संतुष्ट हो जाती है? जवाब है ना। मनुष्य इतने में संतुष्ट नहीं होता। मेरे कहने का मतलब यह है कि एक बार जब आप सफलता प्राप्त कर लेते हैं तो सफलता समाप्त नहीं होती। मन में फिर नई आशा घर कर जाती है। फिर मन सपने देखता है। और इंसान जीत हासिल करने के आशा में एक नई मंजिल की ओर दौड़ पड़ता है।

सरल शब्दों में कहें तो यदि कोई व्यक्ति जो चाहता है, या जिसके लिए वह प्रयास करता है, वह पूरा हो जाता है तो वह इसे सफलता मान लेता है। विजय का दिन एक दिन होता है और विजय की स्मृति जीवन भर की होती है। लेकिन संघर्ष हर दिन है। यहां इंसान किस्मत से मुकाबला करता है। जीत या हार का डर इंसान को संघर्ष करने से नहीं रोक पाता ।लेकिन सफलता उन संघर्षों का सार है।

जो सफल हुए समाज की नजरों में उनके संघर्ष याद रहते हैं। या फिर संघर्ष करने के बाद भी विजय टीका नहीं मिल पाने वाली सारी कहानियाँ पांडुलिपियों में सिमट कर रह जाती है। जैसे कि मेहनत और संघर्ष का एकमात्र प्रमाण सफलता ही है। किसी को यह याद नहीं रहता कि इनके बिना सफलता महज़ एक सपना हो जाता है।

जीवन में सफलता के दो कदम। एक सफलता की पूर्व अवस्था और दूसरी सफलता के बाद की स्थिति। दोनों में जमीन आसमान का फर्क होता हैं। पूर्व अवस्था में मनुष्य एक संघर्षशील योद्धा रहता है, जो विजय और पराजय के बीच केवल युद्ध ही जानता है। युद्ध न केवल प्रतिकूल परिस्थितियों के विरुद्ध होता है, बल्कि कभी-कभी स्वयं के विरुद्ध भी होता है। यह बहुत ही कठिन मामला है। जब आत्मविश्वास डगमगाता है तो आपके मन में अपने आप सवाल उठता है, क्या मैं कर सकता हूँ! बस यही वह जगह है जहां लोग संघर्ष करते-करते थक जाते हैं। क्या मैं कर सकता हूँ! से मैं कर सकता हूँ तक का समय बहुत भारी होता है। अंदर ही अंदर में जलाता है। समाज का सवाल

बड़ा तीखा होता है। जब मनुष्य स्वयं पर विजय प्राप्त कर लेता है, मैं कर सकता हूँ का वादा कर लेता है, तो उस समय इस स्थूल समाज की सारी प्रतिकूल परिस्थितियाँ अनुकूल हो जाती हैं। अद्‌भुत है यह मन का बल और विचित्र है वह शक्ति।

अब सफलता के बाद की स्थिति आती है। संघर्ष की हुई समाप्ति और युद्ध की हुई जीत। चारों ओर से शुभ कामनाएं पाकर व्यक्ति आत्ममुग्ध होता है। कर्म का फल अवश्य मिलता है। जब तक संघर्ष का फल आपके हाथ तक नहीं पहुंचता आपको मजबूत नहीं बनाता, तब तक सफलता आपसे कोसों दूर होती है। मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि सफलता के बारे में आश्वस्त होना अहंकार पैदा करता है और अहंकार विफलता का कारण बन सकता है। सफलता केवल आपकी नहीं, बल्कि आपके संघर्ष में शामिल हर जीवित, निर्जीव चीज़ की है। जैसा कि कहा जाता है, विफलता सिखाती है लेकिन सफलता हमेशा साबित करती है, केवल आत्म-विश्वास ही शक्ति है।

ये वक्त भी एक दिन गुजर जाएगा । सब कुछ अस्थायी है। इसका मतलब है कि सफलता हमेशा के लिए नहीं है। समय के चक्र में सफलता और असफलता दोनों ही जीवन का हिस्सा हैं। वे मौसम की तरह बदलते हैं। जीवन में सफलता और असफलता दोनों ही आवश्यक हैं। असफलता के बिना सफलता अधूरी है। जिंदगी की जंग में इंसान को हर पल तैयार रहना चाहिए। इस जीवन के लिए आपको बस आत्मविश्वास और आत्म-प्रेम की आवश्यकता है। जब ये दोनों एक साथ होते हैं तो कोई भी लक्ष्य दूर नहीं होता या असफलता अपरिहार्य नहीं होती। पहले खुद को जानें और आत्मविश्वास के साथ जीवन में आगे बढ़ें।

✦✧✦

आस्था, इतिहास और संस्कृति का पवित्र संगम : कुंभ

डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

कुंभ दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक और पवित्र सनातन आयोजन माना जाता है। कुंभ का त्योहार केवल एक मेले का त्योहर नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, तपस्या और भक्ति का त्योहार है। यह आश्चर्यजनक अपितु सत्य है कि हर धर्म और जाति के करोड़ों लोग बिना किसी आमंत्रण के कुंभ में पहुँच जाते हैं और वह स्थान एक मिनी इंडिया का रूप ले लेता है।

कुंभ संस्कृत का ऐसा शब्द है जिसका अर्थ है 'पवित्र कलश'या 'घड़ा'। कुंभ मेले के पौराणिक महत्त्व को समझने के लिए हमें इससे संबंधित एक बेहद ही लोकप्रिय पौराणिक कथा से परिचित होना पड़ेगा जो इस पर्व की धार्मिक गहराई और सांस्कृतिक महत्त्व को उजागर करती है। विष्णु पुराण में वर्णित एक कथा के अनुसार एक बार दुर्वासा ऋषि ने एक दिव्य माला बनाई और उसे देवराज इंद्र को भेंट की। लेकिन इंद्र ने उस माला का अनादर करते हुए अपने हाथी के मस्तक पर डाल दी। उनके हाथी ने उस माला को सूंड से लपेटकर अपने पैरों से कुचल डाला। यह देख क्रोधित होकर ऋषि दुर्वासा ने इंद्रदेव को उसकी शक्ति वैभव और साम्राज्य नष्ट होने का श्राप दे दिया। इस श्राप के बाद सभी देवता शक्तिहीन हो गए। अपनी शक्तियों को पुनः प्राप्त करने के लिए देवता भगवान ब्रह्मा और शिव की शरण में गए। तब भगवान शिव और ब्रह्मजी ने उन्हें भगवान विष्णु से प्रार्थना करने की सलाह दी।

देवताओं को उनकी शक्ति पुनः प्राप्त करने के लिए भगवान विष्णु ने इंद्रदेव को क्षीर सागर का मंथन करके अमृत निकालने की सलाह दी। लेकिन समुद्र का मंथन अकेले देवताओं के बस का काम नहीं था। इसीलिए भगवान विष्णु की सलाह पर देवताओं और दैत्यों ने संधि कर ली और समुद्र मंथन कर अमृत निकालने के लिए तैयार हो गए। देवताओं ने दैत्यों से कहा कि जो भी समुद्र मंथन से प्राप्त होगा वह आपस में बराबर बांट लेंगे। समुद्र मंथन का कार्य शुरु हुआ जिसमें एक ओर देवता और दूसरी ओर दैत्य खड़े हो गए। पर्वत मंदराचल को मथनी बनाया गया और नागराज वासुकी को रस्सी। विष्णु जी ने कछुए का रूप धारण किया और पर्वत को स्थिरता प्रदान की।

जैसे-जैसे समुद्र मंथन होता गया एक-एक करके अद्‌भुत वस्तुएँ निकलने लगीं। श्रीमद् भागवत पुराण के सागर प्रसंग में दिए गए 'कुंभ' विवरण के अनुसार सागर से 14 रत्न निकले थे। सबसे पहले 'हलाहल' या 'विष' निकला। इस विष की ज्वाला इतनी तीव्र थी कि सभी देवता और दानव जलने लगे थें। तब भगवान शिव ने देवताओं और दानवों एवं समस्त सृष्टि की रक्षा के लिए इस विष को खुद धारण कर लिया। इसके बाद सागर मंथन में कामधेनु, कल्पवृक्ष, कौस्तुभमणि, उच्चैश्रवा अश्व, ऐरावत हाथी, रंभा अप्सरा, सुरा, लक्ष्मी, चंद्रमा, शार्गंधनुष, पंचजन्य शंख और अमृत कलश लेकर भगवान धन्वंतरी निकले। जैसे ही समुद्र मंथन से अमृत कलश प्रकट हुआ तब दानव और देवता सभी की नज़र उस कलश पर टिक गई। असुरों ने तुरंत इसे देवताओं से छीनने की योजना बनाई। अमृत कलश को हासिल करने के लिए देवताओं और दानवों में युद्ध छिड़ गया था। अमृत कलश को लेकर देवताओं और दानवों के बीच 12 दिनों तक अनवरत युद्ध चला। 12 दिनों तक चलने वाला यह युद्ध धरती में 12 वर्षों के समान है क्योंकि देवलोक का 1 दिन धरती के 1 वर्ष के समान है। युद्ध के समय अमृत कुंभ की बूंदे 12 स्थानों में गिरी। उनमें से 8 स्थान देवलोक में तथा 4 स्थान धरती लोक में स्थित है। धरती लोक में जहाँ अमृत कलश की बूंदे गिरी वे हैं - हरिद्वार की गंगा नदी, प्रयागराज के त्रिवेणी संगम (गंगा, यमुना और सरस्वती), उज्जैन की शिप्रा नदी तथा नासिक की गोदावरी नदी। पृथ्वी के जिन स्थानों में अमृत कलश की बूंदे गिरी, वहाँ कुंभ मेले का आयोजन शुरू हुआ। कहा जता है कि 9 वीं सदी में आदिगुरू शंकराचार्य ने हिंदू संस्कृति को सुदृढ़ करने और लोक कल्याण की दृष्टि से कुंभ मेले की परंपरा का प्रारंभ किया।

कुंभ महोत्सव का आयोजन ज्योतिषीय गणनाओं और विशेष खगोलीय स्थितियों पर आधारित होता है। हरिद्वार में कुंभ महोत्सव तब आयोजित किया जाता है जब बृहस्पति कुंभ राशि में प्रवेश करते है और सूर्य मेष राशि में होता है। प्रयागराज में कुंभ का आयोजन तब होता है जब बृहस्पति वृषभ राशि में तथा सूर्य और चंद्रमा मकर राशि में प्रवेश करते हैं। नासिक में गोदावरी के तट पर कुंभ महोत्सव होता है जब सूर्य और बृहस्पति सिंह राशि में प्रवेश करते हैं। जब बृहस्पति सिंह राशि में और सूर्य मेष राशि में होते हैं तब उज्जैन में शिप्रा नदी के तट पर कुंभ मनाया जाता है। मान्यता है कि इस दौरान इन पवित्र स्थानों पर स्थित नदियों में स्नान करने से मनुष्यों को पापों से मुक्ति मिलती है और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

कुंभ का आयोजन चार प्रकार से किया जाता है - कुंभ, अर्धकुंभ, पूर्णकुंभ और महाकुंभ।

कुंभ मेला - कुंभ मेले का आयोजन हरिद्वार, उज्जैन, नासिक और प्रयागराज में होता है। सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति ग्रहों की स्थिति के आधार पर कुंभ मेले

का आयोजन होता है। इस दौरान श्रद्धालु पवित्र नदियों में डुबकी लगारक मोक्ष की कामना करते हैं।

अर्धकुंभ मेला – यह मेला हर 6 वर्षों में आयोजित होता है। इस कुंभ के बीच के आयोजन के रूप में देखा जाता है। यह मेला सिर्फ 2 स्थानों – प्रयागराज और हरिद्वार के आयोजित होता है।

पूर्णकुंभ मेला – यह मेला हर 12 सालों में एक बार होता है। यह चार प्रमुख पवित्र स्थलों – प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन किसी में भी हो सकता है। पूर्ण कुंभ सूर्य के चारों ओर बृहस्पति के पूर्ण चक्र का उत्सव है।

महाकुंभ मेला – यह सबसे महत्त्वपूर्ण और प्रतिष्ठित मेला है। 12 बार पूर्णकुंभ हो जाता है तब हर 144 वर्षों बाद एक महाकुंभ मेला का आयोजन प्रयागराज में त्रिवेणी संगम के तट पर होता है। शास्त्रों के अनुसार महाकुंभ में स्थान और दान करने से कई गुना अधिक पुण्य की प्राप्ति होती है।

इस बार महाकुंभ 2025 का आयोजन प्रयागराज (इलाहाबाद) में 13 जनवरी से 26 फरवरी तक हुआ। महाकुंभ के दौरान कुछ ऐसे खास दिन होते हैं जब स्नान को ज्यादा पुण्यकारी माना जाता है। इसे ही शाही या अमृत स्नान कहा जाता है। इस दिन सभी प्रमुख अखाड़ों के संत जुलूस के साथ निकलते हैं और संगम में डुबकी लगाते हैं। इस बार 6 तिथियों पर शाही स्नान का आयोजन हुआ – पौष पूर्णिमा (13 जनवरी 2025), मकर संक्राति (14 जनवरी 2025), मौनी अमावस्या (29 जनवरी 2025), बसंत पंचमी (03 फरवरी 2025), माघी पूर्णिमा (12 फरवरी 2025) तथा महाशिवरात्रि (26 फरवरी 2025) को शाही स्नान किया गया। इस दौरान त्रिवेणी नदी में करोड़ों श्रद्धालुओं ने पवित्र डुबकी लगाकर अपनी आस्था को प्रकट किया। महाकुंभ के पवित्र स्नान का क्रम अनुशासित होता है। सबसे पहले नागा साधु स्नान करते हैं। फिर संत समाज और आम जनमानस संगम में पवित्र डुबकी लगाते हैं।

भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी का भी कहना है कि कुंभ मेला इतना विशाल और भव्य होता है कि इसे अंतरिक्ष से भी देखा जा सकता है। 2017 में यूनेस्को ने अपनी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में कुंभ मेले को शामिल किया जो इसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत को स्पष्ट रूप में दर्शाता है।

✦✧✦

मेरे और मेरे प्रिय मित्र पर्यावरण के बीच एक संवाद

सुश्री किरण देवी
एम.टी.एस.

मैं – हे प्रिय मित्र तुम कैसे हो ?

पर्यावरण – तुमको क्या लगता है कि मैं कैसा हूँ ?

मैं – सच पूछों तो मुझे तुम्हारे दुःख का आभास होता है पर तुम्हारे दुःख का कारण मेरे जैसे इंसान ही है। इसीलिए सच जान कर भी अंजान बनना पड़ता है।

पर्यावरण – तुमने मुझे मित्र कहा और मित्र के दुःख को जानकर भी अंजान बनना अच्छी बात है क्या? क्या सच्ची मित्रता ऐसी होती है ?

मैं – हे प्रिय मित्र मुझे मालूम है कि हम मनुष्य अपने क्षणिक सुख के प्राप्ति के लिए तुम्हारे संसाधनों का अनुचित तथा बिना सोचे समझे इस्तेमाल करते है। किन्तु मेरे अकेले के समझने से कुछ नहीं होगा।

पर्यावरण – इसका मतलब मनुष्य मेरा सर्वनाश कर देंगे। और मेरे साथ ऐसे ही दुर्व्यवहार करते रहेंगे

मैं – हे मित्र, ऐसा नहीं है कि हम मनुष्यों को तुम्हारे साथ कर रहे दुर्व्यवहार और उसके विपरीत परिणामों का आभास नहीं। परंतु हम मनुष्य इतने स्वार्थी हो गये हैं कि हमें अपने स्वार्थ के आगे किसी की पीड़ा दिखाई नहीं देती।

पर्यावरण – मित्र, मुझे यह बताओ कि क्या मेरे सर्वनाश से मनुष्यों को कोई हानि नहीं होगी ? हाँलाकि इस प्रश्न का उत्तर मुझे भलि-भांती ज्ञात है। परंतु मुझे जानना है कि मनुष्यों को इसके विपरीत परिणामों का आभास है कि नहीं ?

मैं – हाँ! जरूर हानि होगी। किन्तु जैसे मैंने पहले भी कहा है कि मनुष्य अपने स्वार्थ के आगे सब भूल गया है।

तुम्हारे साथ कर रहे दुर्व्यवहार के विपरीत परिणामों का आभास हम मनुष्यों को दिन प्रतिदिन होता है।

निम्नलिखित माध्यमों से – जल वायु परिवर्तन, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ग्रीन हाऊस प्रभाव, ग्लोबल वार्मिंग, प्रजातियों का लुप्त होना, पानी की कमी, जैव विविधता के नुकसान, भूमि मिट्टी का क्षरण इत्यादि।

पर्यावरण – तो क्या मनुष्यों को इससे बचने का उपाय नहीं पता है ?

मैं – मेरे अनुसार, ऐसी कोई समस्या नहीं होती जिसका समाधान न हो। मनुष्यों को ज्ञात है कि तुम्हे स्वास्थ्य रखने के लिए उन्हें – अधिक से अधिक वृक्षारोपण, संसाधनों का उचित इस्तेमाल, हरित ऊर्जा को बढ़ावा देना, जल व बिजली संरक्षण, एकल उपयोग प्लास्टिक को कम करना इत्यादि विषयों पर अमल करना होगा।

पर्यावरण – तो सब कुछ ज्ञात होने के बाद भी मनुष्य मेरे और अपने सर्वनाश की ओर अग्रसर है।

मैं – हे प्रिय मित्र, तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर मैं भॉलि-भाँति नहीं दे सकती। इस बात का मुझे बहुत दुख भी है। बस इतना ही कह सकती हूँ कि तुम्हारे दुख मेरा तथा हम मनुष्यों का दुख है, और तुम्हारे सुख में हमारी सुख और समृद्धि है।

✦✧✦

माँ का दर्द

सुश्री रिंकू सिन्हा
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

सच ही कहते हैं....
माँ से बस सब उम्मीदे रखते हैं,
उसके दर्द को कोई नहीं समझता
उस दिन तुम्हारे स्कूल से लौटते वक़्त
मैं स्कूटी से लुढ़क गयी
चोट जो लगी सो लगी ....
नयी जीन्स मेरी... पहली बार ही तो पहनी थी,
घुटने पर ही फट गयी
और तुम ..'' क्या माँ तुम भी न''
बोल कर आगे निकल गयी
तुम्हारी तो जैसे दोस्तों के आगे नाक ही कट गई,
अरे, मम्मी स्कूटी से गिर गयी !
काश ''कहीं ज्यादा चोट तो नहीं लगी''
ये मुझसे कोई पूछ लेता
माँ से बस सब उम्मीदे रखते हैं,
उसके दर्द को कोई नहीं समझता
तुम्हारे पापा भी सारी उम्मीदें मुझसे ही लगाते हैं
परीक्षा में गड़बड़ करती तुम,
और वो आँखे मुझे दिखाते हैं
कहते हैं पढ़ी लिखी माँ हो
थोड़ा बच्चे को पढ़ा लिया करो
दिन भर करछी चम्मच चलाती हो, कभी कागज़,
कलम पे भी हाथ चला लिया करो
वो समझते नहीं या समझना चाहते नहीं ..
जो पढ़ी दसवीं में मैं वो अब तुम आठवीं में पढ़ती हो
मैं रही हिंदी मिडियम और
तुम सारे होमवर्क अंग्रेजी में करती हो
कुछ भूल चूक होती अंग्रेजी में तो
मज़ाक है मेरा बनता
माँ से बस सब उम्मीदे रखते हैं,
उसके दर्द को कोई नहीं समझता
दादी की भी उम्मीदें मेरी ही कंधे टिकती हैं
बेटी को संस्कारी बनाओ, पूजा पाठ सिखाओ
हर दिन फ़ोन पे कहती हैं
कैसे समझाऊँ उनको आजकल के बच्चे
भारतीय कम कोरियाई संस्कार ज्यादा सीखते हैं
खाने में मांगते नूडल्स और कमरे में लड़की जैसे
दिखने वाले लड़कों की तस्वीर लगाते हैं
पूजा पाठ से कोसों दूर बस मोबाइल की दुनिया में है
दिल इनका लगता

माँ से बस सब उम्मीदे रखते हैं,
उसके दर्द को कोई नहीं समझता
टीचर भी तुम्हारे हर PTM पर मुझे कुछ नया सुनाते हैं
आजकल की माओं की बढ़ती जिम्मेदारियां
हर महीने याद दिलाते हैं
अपना काम हमारे जिम्मे मढ़ते,
खुद ज्यादा लोड लेने से कतराते हैं
बातें करते तुम्हारे बारे में पर उम्मीदे मुझसे ही जताते हैं
कोई कैसे समझाएं उनको मेरा मन भी
गर्मी की छुट्टी लेने को करता
माँ से बस सब उम्मीदे रखते हैं,
उसके दर्द को कोई नहीं समझता
माँ हूँ तुम्हारी, पर बस माँ ही थोड़े न हूँ
न ही बहु बेटी या पत्नी भर ही हूँ
मैं इन सबसे कहीं ज्यादा किरदार निभाने वाली
एक इंसान हूँ
हर सुबह घर के पिछवाड़े आने वाली उस गैया के लिए
एक रोटी की उम्मीद हूँ मैं
हर रात तुम्हारे आधे छोड़े टिफ़िन से
गली के कुत्तों का निवाला जुटाती हूँ मैं
गर्मी में मुरझाए गमले के पौधों के लिए
पानी की ठंडी फुहार हूँ मैं
छत पर हर दिन आने वाली गौरैया के लिए तो
जैसे चावल का भंडार हूँ मैं
दिन भर नाचती चकरघिन्नी सी एक औरत सबको
संतोष दिलाती है
कभी ध्यान से बैठ के सोचो दिन भर
वो क्या क्या रोल्स निभाती है
पर कमज़ोरी कहो या ताक़त इसको ...
जिस दिन बनती खुद माँ है वो फिर उसका दिल
अपने बच्चे में ही बसता
माँ से बस सब उम्मीदे रखते हैं,
उसके दर्द को कोई नहीं समझता ।

✦✧✦

मैं और मेरे पिताजी

श्री विजय गणपतराव डंभारे
सहायक पर्यवेक्षक

- जब मैं 3 वर्ष का था तब मैं सोचता था कि, मेरे पिता दुनिया के सबसे मजबूत और ताकतवर व्यक्ति हैं।
- जब मैं 6 वर्ष का हुआ तब मैंने महसूस किया कि, मेरे पिता दुनिया के सबसे ताकतवर ही नहीं सबसे समझदार व्यक्ति भी हैं।
- जब मै 9 वर्ष का हुआ तब मैं महसूस करने लगा की मेरे मित्रों के पिता मेरे पिता के मुकाबले ज्यादा समझदार हैं।
- जब मैं 15 वर्ष का हुआ तब मैंने महसूस किया कि मेरे पिता को दुनिया के साथ चलने के लिए कुछ और ज्ञान की जरूरत है ।
- जब मैं 20 वर्ष का हुआ तब मुझे महसूस हुआ कि, मेरे पिता किसी और ही दुनिया के हैं और वे हमारी सोच के साथ नहीं चल सकते ।
- जब मैं 25 वर्ष का हुआ तब मैंने महसूस किया मुझे किसी भी काम के बारे में अपने पिता से सलाह नहीं करनी चाहिए क्योंकि उनमें हर काम में कमी निकालने की आदत सी पड़ गई है।
- जब मैं 30 वर्ष का हुआ तब मैं महसूस करने लगा कि, मेरे पिता को मेरी नकल करने से कुछ समझ आ गई है।
- जब मैं 35 वर्ष का हुआ तब मैं महसूस करने लगा की उनसे छोटी मोटी बातों के बारे में सलाह ली जा सकती है।
- जब मैं 40 वर्ष का हुआ तब मैंने महसूस किया कि, कुछ जरूरी मामलों में पिताजी से सलाह ली जा सकती है ।
- जब मैं 50 वर्ष का हुआ तब मैंने फैसला किया कि, मुझे अपने पिता की सलाह के बिना कुछ नहीं करना चाहिए क्योंकि मुझे यह ज्ञात हो गया है कि मेरे पिता दुनिया के सबसे समझदार व्यक्ति है पर इससे पहले की, मैं अपने इस फैसले पर अमल कर पाता, मेरे पिताजी इस संसार को अलविदा कर गए और मैं अपने पिता की हर सलाह और तर्जुबे से वंचित रहा ।

✦✧✦

जय श्रीकृष्ण

श्री बालकृष्ण अडामे
सहायक पर्यवेक्षक

अब रह नहीं पाता है
ये इश्क मेरे भगवान
कितना तड़पता है
बिन तेरे एक साथ।
कभी आहें भरता हैं
कभी दिल धड़कता है
बस तेरे पहलू में
जीने की चाहत है।
ज़िन्दगी तू मेरी
तुझसे ही उलट है
जब दुआ मांगी है भगवान।
बस तुझे माँगा है।
तुझको ही पाया है
दिल को बहुत समझाया
तेरे दीदार से हाय।
कितना तड़पता है
बिन तेरे इक साथ
अब न होना मेरे से जुदा
ये इश्क मेरे भगवान।

✦✧✦

हरदम यूँ ना ऊपर देखें

श्री विजय इस्सर वत्स
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हरदम यूँ ना ऊपर देखें
मिट्टी को भी छूकर देखें।
पानी पवन प्रकाश के बिना
थोड़े पल तो जीकर देखें।
पाने से सब खुश होते हैं
खुशी खुशी कुछ खोकर देखें।
दाग लगाना बहुत सहज है
फिर से उसको धोकर देखें।
अपनापन बढ़ जाए हम में
आपस में हम मिलकर देखें।
इक दूजे के लिए बने तो
दो मिल एक तो होकर देखें।
अपने क्यों होते बेगाने
रिश्तों को संजोकर देखें।
राह चलें पर आँख खोलकर
लग जाए ना ठोकर देखें।
काँटों सी लगती है दुनिया
फूल कभी हम बोकर देखें।
लिपटे हैं सुख के चादर में
दुख का चादर सीकर देखें।
मदिरा पीकर इठलाये अब
राम का आँसू पीकर देखें।

✦✧✦

हे सृष्टि

श्री राजेश कुमार कटरे
वरिष्ठ अनुवादक

मनके रंग–बिरंगे माला एक अजीब
देखो कितनी तपती है धरती तब
जब सूरज इस पर आग उगलता है
फिर भी सुबह–शाम होती है धूप सुहानी
ज्यादा ठंड से कितनी होती है हैरानी
उष्णता–शीतलता में साम्य अभी होने दो
समय चक्र को यथाक्रम चलने दो
मृदाश्रित बीजों को जरा उग जाने दो ।

किसी अंकुर पर जब रवि किरण आई
जब बरखा ने उस पर ममत्व बरसाई
तब नवलता बन वह उन्मुक्त इठलाई
वह है संचयिका कोमल फूलों–पत्तों की
साकार हुए सरोकारों को इसे सुलझाने दो
ये अवसर की प्यासी है मत झुंझलाने दो
समय चक्र को यथाक्रम चलने दो
मृदाश्रित बीजों को जरा उग जाने दो ।

बागानों की मनोरम मोहकता पर
जग मत डालो व्यभिचारी नजर
तुम्हारी सर्वजन हिताय यदि नहीं है डगर
तब संदेश यही तुमको सौंदर्य प्रिय जन
अपना–अपना आंगन अपना–अपना है उपवन
रिश्तों की मर्यादित बाड़ जरा रह जाने दो
समय चक्र को यथाक्रम चलने दो
मृदाश्रित बीजों को जरा उग जाने दो ।

जो बसंत आगमन से भले उत्साहित हैं
किंतु बहारें जो तम में विलित करते हैं
जहाँ वसुधैव कुटुंबकम विघटित होता है
भाव–विचार जहाँ संलयित नहीं होते हैं
हे सृष्टि ! वहाँ बसंत मत आने दो
प्राकृतिकता को अपमानित मत होने दो
समय चक्र को यथाक्रम चलने दो
मृदाश्रित बीजों को जरा उग जाने दो ।

✦✧✦

मीडिया, बाजार और उपभोक्तावाद का क्षेत्र त्रिकोण

श्री मोहम्मद अवेश अंसारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

वर्तमान समय मीडिया, बाजार और उपभोक्तावाद का है। आधुनिक मानव उपभोग की लक्ष्मण-रेखा को न जाने कब का पार कर चुका है। आर्थिक स्थिति में आए बदलाव ने मिडिया के सहारे लोगों को उपभोक्ता बनाया है। लोगों ने अपनी जरूरतों को छोड़ इच्छाओं की पूर्ति के दिशा में कदम बढ़ाया है। ''अंडरस्टैंडिंग मीडिया (1964) नामक पुस्तक में मार्शल मैक्लूहान ने समूची सभ्यता के विकास को संचार माध्यमों के विकास के रूप में देखा है, किन्तु आधुनिक युग में माध्यमों की परिवर्तनकारी भूमिका पर जोर दिया गया। उनके कहने का तात्पर्य यही है कि मीडिया, जिस तरीके से बाजार को लोगों के सामने प्रस्तुत कर रहा है उसका प्रभाव दीर्घकालिक होता दिख रहा है। इस विषय पर यह कहना सार्थक प्रतीत होता है कि ''बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में मनुष्य को नागरिक नहीं उपभोक्ता समझा और माल बेचने की रणनीति में उपभोक्ता को नहीं अपने हितों को सर्वोपरि माना। व्यापारिक रणनीति के लिए उन्होंने विज्ञापन उद्योग का सहारा लिया। यह वही दौर था जब भारत में एल.पी.जी. सुधार किए गए थे। इसके बाद सभी क्षेत्रों में उदारीकरण की राह अपना ली गई थी। इसीलिए आज चमक-दमक, ग्लैमर आलिशान महल, सिनेमा और उपभोक्ता वस्तुओं की भरमार लोगों के जीवन की प्रमुख आकांक्षा बन चुकी है। इन सबके बिना जीवन को बेकार माना जाने लगा। यह समय फैंटेसी का है तभी तो इस समय में सत्य, खुशियाँ सामाजिक और पारिवारिक संबंध एवं सामाजिक सुरक्षा दुर्लभ है। भूमण्डलीकरण के प्रभाव-स्वरूप औद्योगिक पूँजीवाद ने इन सबको जन्म दिया है। इन सब खतरों को ध्यान में रखते हुए पूर्व केन्द्रीय मंत्री वी. के. आर. बी. राव ने इस बात पर –

1) **भूमण्डलीकरण और मीडिया, कुमुद शर्मा, ग्रंथ अकादमी, दिल्ली, प्र– 29 में** जोर दिया कि नए किस्म का उपभोक्तावाद नए सामाजिक तनावों, द्वेषों और झगड़ों को हिंसक रूप देता है। दूरदर्शन द्वारा दी जा रही उपभोक्तावादी संस्कृति पर विचार करते हुए दूरदर्शन के लिए बनी पी.सी. जोशी कमेटी ने लिखा हैः दूरदर्शन पर जो विज्ञापन आते हैं, जबर्दस्त रूप से उपभोक्ता सामान और सेवाओं के होते हैं, जिन्हें भारत के संदर्भ में सिर्फ भोगविलास की चीजें कहा जा सकता है। बात में पूँजी के दबाव के कारण इस रिपोर्ट का खण्डन करते हुए कहा गया कि विज्ञापनबाजी और प्रायोजित कार्यक्रम अपरिहार्य हैं। किन्तु उन्हें ऐसा होना चाहिए कि वे स्वीकृत सामाजिक तथ्यों को नष्ट न करें और शुद्ध व्यावसायिकता एवं उपभोक्तावाद को बढ़ावा न दें।''

लेकिन ये बातें इतनी आसान नहीं हैं क्योंकि टेलीविजन हमारे ऊपरी उपभोक्ता व्यवहार पर ही असर नहीं डाल रहा, हमारी काल्पनिकता, अभिव्यक्ति की लाक्षणिकता और भाषा रूपों पर भी असर डाल रहा है। उसने थोड़े समय में ही प्रत्येक चीज को गिरफ्त में ले लिया है जहाँ वह जीवित रहेगा तो बिक सकेगा। अपने एक लेख राष्ट्रीय मीडिया के मुख्य मुद्दे में शम्भूनाथ ने बताया है कि खबर बनाने और खबर रोकने में पैसे तथा दूसरे प्रभावों की भूमिका अहम हो गई हैं। नेता जनता से संबंध रखने की जगह पैसे के प्रभाव से मीडिया से संबंध रखने में ज्यादा दिलचस्पी लेते हैं।

पहले के नेता जनता के माध्यम से मीडिया तक पहुँचते थे, आज मीडिया के माध्यम से जनता तक पहुंचते हैं। आज की मीडिया ने जनता और नेता के बीच सीधा संबंध प्रायः खत्म कर दिया है।

2) राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष और हिंदी पत्रकारिता, सं. श्रीनिवास शर्मा पृ.– 171 मीडियाजनित विज्ञापन से जो विराट उपभोक्ता संस्कृति फैल रही है उससे देश के विकास में कितना योगदान हो रहा है यह बहुत आवश्यक प्रश्न है। इसने मध्य वर्ग के आय से अधिक खर्च को बढ़ाया है। इससे सामाजिक असमानता बढ़ी है। धन के असमान वितरण ने तरह–तरह की समस्याओं को जन्म दिया है। आधुनिक मानव इसी मीडिया, बाज़ार और उपभोक्तावाद की संस्कृति के त्रिकोण में फंसकर छला जा रहा है और उसे इसका आभास भी नहीं है।

✦✧✦

हिंदी दिवस

श्री संदीप बुटोलिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हिंदी है भारत के भाल की बिंदी ।
हिंदी जान है देश की ।।
हिंदी है राष्ट्र का सम्मान गौरव ।
हिंदी शान है देश की ।।
चौदह भाषाओं से बनी है राष्ट्रभाषा ।
यह राह उन्नति की है करें पूरी आशा ।।
ये दिलों को मिलाती ।
ये दूरियां मिटाती ।।
प्यारी जुबान है देश की ।। 1
ये तुलसी कबीर सूर सबको है सुहाती ।
ये दोहा ग़ज़ल गीत भजनों में रंग जाती ।।
इसमें भारी मिठास है।
आती सबको रास है ।।
ये मीठी तान है देश की ।। 2
हर गांव शहर कस्बे में इसको बोलते हैं।
द्वार भावनाओं के लोग सहज खोलते हैं ।।
ये फूलों सा महकती ।
ये पंछी सा चहकती ।।
ये ऊंची उड़ान है देश की ।।३
हम हिंदी में ही हरदम अपनी बात करेंगे ।
हम थाम कर दामन इसका साथ चलेंगे ।।
ये राष्ट्र की धरोहर है।
प्यारी मधुर मनोहर है ।।
शक्ति महान है देश की ।। 4

✦✧✦

नागद्वार यात्रा

श्री अभय अ. सराफ
लेखापरीक्षक

कैलासराणा शिवचंद्रमौळी।
फणींद्र माथां मुकुटी झळाळी।
कारुण्यसिंधू भवदुःखहारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ।।

भारत भूमि के हर कंकर कंकर में शंकर विराजते हैं। देवाधिदेव महादेव के स्थान पचमढ़ी में हर साल सावन महीने में नागद्वार यात्रा होती है। नागद्वार यात्रा मार्ग सातपुड़ा टाइगर रिजर्व के कोर क्षेत्र में आता है। इसलिए साल में सिर्फ 10-11 दिन ही यह मार्ग खोला जाता है। नागद्वार की लगभग 30-35 किलोमीटर की पैदल यात्रा में पद्मशेष, पश्चिमद्वार, चित्रशाला, अग्निद्वार, नागिनीपद्मिनी, चिंतामणि इन स्थानों का दर्शन लाभ मिलता है।

नागपूर से पचमढ़ी की दूरी लगभग 260 किलोमीटर से भी अधिक है, इसके बावजूद नागद्वार की आध्यात्मिक चुंबकीय शक्ति नागपूर के श्रद्धालुओं को यहाँ खींच लाती है। श्रद्धालुओं द्वारा ये दोनों जगह आपस में खास तालमेल बनाये हुए है। आस्था के इस भव्य पर्व में मुझे भी इस साल सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला।

हम तीन दोस्त तथा तीनों के सुपुत्र ऐसे 6 लोग नागद्वार यात्रा के लिये नागपूर से निकले, एक दोस्त उनके सुपुत्र के साथ पुणा से नागपुर किसी पारिवारिक कार्यक्रम में हाजिरी लगाने तथा नागद्वार यात्रा के लिये आये थे। पचमढ़ी की घाटी से ही बरसात हमारे साथ थी, हम पहाड़ पर बादलों के बीच में थे, ठंडी हवाएँ चल रही थी, मौसम काफी ठंडा था। हम नागपुर से पचमढ़ी पहुँचे तो शाम के 7 बज चुके थे। पचमढ़ी में पार्किंग में गाड़ी लगाकर वहाँ से जिप्सी से धूपगढ़ पहुँचे। धूपगढ़ में प्रथम सीढ़ी को नमन करके यात्रा प्रारंभ की। अब शाम के 8 बज चुके थे और पूरा अंधेरा हो चुका था, जंगल में जाने के लिए हमने साथ में लकड़ी तथा टॉर्च लिये थे। पैदल आगे बढ़े तो लगभग एक किलोमीटर चलने के बाद धूपगढ़ की तरफ वापस जाने वाले कुछ श्रद्धालु रास्ते में मिलें। 'हरी-हर' कह कर

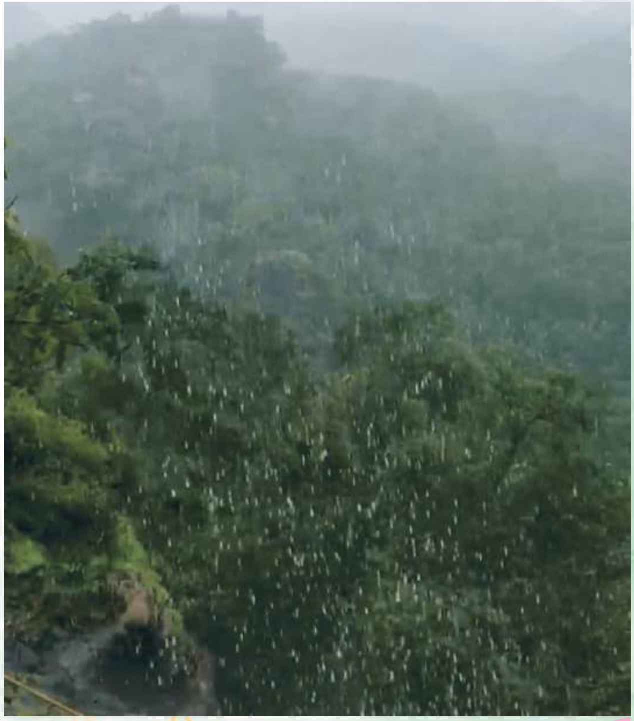

हमने एक दूसरे को अभिवादन किया। इस यात्रा में 'हरी-हर' तथा 'सेवा-भगत' कहकर एक दूसरे के साथ वार्तालाप होता है. वापस जाने वाले श्रद्धालु आपस में चर्चा कर रहे थे, ये लोग इतनी रात को जंगल में कहाँ रुकेंगे। सर्वप्रथम पड़ाव भजेगीरी तक तो पहुँचते हैं, आगे की योजना वही बनायेंगे यह सोच कर हम आगे बढ़ते रहें। जी हाँ भजेगीरी के नाम में ही भजे है और यहाँ भजे (पकोड़े) ही मिलते है, भजेगीरी में गरमा गरम प्याज के पकोडों के साथ अदरक की चाय ने सबको अंदुरुनी स्फुर्ति ला दी और रात को ही नागद्वार तक जायेंगे ऐसा एकमत से निर्णय हो गया।

सात पहाडों को चढ़ना उतरना वो भी अंधेरे और बरसात में, सभी बच्चे काफी खुश तथा उत्साहित थे। जंगल का वो रास्ता याने जहाँ से पहाड़ों का पानी नीचे बहता है उसी पानी के रास्ते से आपको पहाड़ चढ़ना-उतरना होता है। आजूबाजू में घना जंगल, एक तरफ खाई, यही नागद्वार के नैचुरल हाईवे से चलना होता है एक के पीछे एक। अगल-बगल में साथ-साथ चलने की यहाँ कोई भी गुंजाईश नहीं है छोटे बड़े पत्थरों के बीच बड़ी सावधानी से हम चलते रहे, 'सावधानी हटी दुर्घटना घटी' की सही अहमियत यहाँ समझ आ गई। बहुत ही रोमांचित करने वाले इस सफर का आगे का पड़ाव 'काजली' नामक कोरकू आदिवासियों का गाँव था। बीच जंगल में असली अंधेरे का जायजा लेने के लिए थोड़ी देर हमने सभी टॉर्च बंद कर दिये तो बहुत सारे जुगनू (मराठी में काजवे) अपनी तरफ से उजाला लाने की पूरी कोशिश करते दिखे। शायद इन काजवे से ही गाँव का नाम काजली पड़ा होगा। जुगनू तेरी रोशनी से कम से कम अंधेरे का तो पता चला, यहाँ तो भरे दिन में भी हमने कई उजाले खो दिये...

अचानक सामने चल रहे साथी ने कहा थोड़ा रुको, पानी का बहाव 8-10 फिट नीचे हो गया था और एक झरना तैयार हो गया था। याने हमारा रास्ता एकदम से 8-10 फिट नीचे हो गया था। पानी किसी के लिए नहीं रुकता वो अपना रास्ता बना ही लेता है, हमारे पास भी यंहा रुकने की कोई जगह नहीं थी, हमें भी आगे बढ़ना था, जैसे तैसे एक दूसरे की सहायता से बाजू से हमने वो झरना पार किया। आगे बड़े-बड़े पत्थर, सीधी ढलाई, कुछ पत्थर तो 4-5 फिट के थे जिन्हे सिर्फ पैरों से पार करना असंभव था, हाथों के सहारे ही उन्हें पार करना पड़ा। अकड़ शरीर में हो या मन में, यहाँ दोनों ही निकल जाती है। वो रास्ता याने एकदम घना जंगल था, आजूबाजू कीचड़ था। दिन में भी वहाँ सूरज की रोशनी नहीं पहुँचती होंगी, इसलिये पत्थरों पे, पेड़ पे सेवार काई जमा हो गयी थी। ऐसा लग रहा था की शायद हम

रास्ता भटक चुके हैं और जंगल में दूसरी तरफ ही आगे बढ़ रहे हैं। लगभग एक घंटा और चलने के बाद काजली गाँव सामने दिखा। सबने जोश से 'हरी-हर' का नारा लगाया. कमर तक बहते पानी के स्रोत को पार कर हमने काजली गाँव को राम राम किया। गाँव में सभी लोग सो रहे थे, हमें तो पद्मशेष में ही रुकना था।

हम पद्मशेष पहुंचे तो रात के 12.30 बज चुके थे। यहाँ पर श्रद्धालुओं के लिए नि:शुल्क निवास तथा भोजन व्यवस्था सामाजिक मंडलो द्वारा कि जाती है। सेवा देने वाले मंडलो को यहाँ गिरी कहते हैं। यहाँ सबसे ज्यादा नागपूर वालों की गिरी है। प्रथम मंदिर में दर्शन करेंगे फिर किसी गिरी में विश्राम करेंगे कह कर हम मंदिर पहुंचे। मंदिर परिसर में 10-12 लोग ही थे। मंदिर गुफा में स्थित है, पानी कि जलधारायें सतत बहती है, जलधाराओं में भीग कर प्राकृतित स्नान करके ही मंदिर में प्रवेश होता है। अंदर जाते ही जलते हुए कपूर कि सुगंध तथा अग्नि की गरमाहट से बहुत ही ऊर्जावान लगने लगा, मन प्रफुल्लित हो उठा। 'जय-भोले', 'हरी-हर' जाप करते हमने दर्शन लिये, सारी थकान निकल गयी।

मंदिर को लगकर सभी गिरीओं में श्रद्धालु गहरी निद्रा में थे, छह लोगों को एकसाथ सोने की जगह मिलना मुश्किल था, थोड़ी दूरी पर एक गिरी में टॉर्च चमकाकर देखने पर थोड़ी जगह दिखी तो हमने यही रुकने का मन बना लिया। सब लोग सोये हुये थे, बिना आवाज किये हमने अंदर प्रवेश किया और सोने की तैयारी की। हम में से किसी का भी रात का भोजन नहीं हुआ था और बच्चों को खाली पेट सोने के लिये कैसे कहेंगे ये विचार मन में आया ही था, कि दोस्त ने इशारे से सबको किचन में बुलाया। किचन में भट्टी सुलग रही थी और खाना भी तैयार था। सबने भर पेट भोजन किया। ये सब इतनी शांति से किया कि किसी की नींद ना खुले। सबको दूसरे दिन सुबह हमारे बताने पर ही पता चला, सुनकर संचालक मंडल तथा सेवा देने वाले सभी खुश हो गये। हमने ये सुना था की यात्रा में आने वाले को शिव जी भूखा नहीं रखते, आज आजमा भी लिया।

गिरी के संचालक मंडल से बातचीत की तो पता चला की गिरी के मालिक का 5 दिन पूर्व ही नागपुर में देहांत हो चुका है। अचंभा तो तब हुआ जब ये पता चला की पुणा से आया हुआ दोस्त इनके ही देहांत पर नागपुर आया था और नागद्वार में उनकी ही गिरी में हमने विश्राम तथा भोजन किया। दोस्त ने कहा, वे हर साल मुझे नागद्वार यात्रा में आने के लिये कहते थे लेकिन कभी आना नहीं हुआ था और कल रात के अंधेरे में पता ही नहीं चला की उनकी ही गिरी में हम आ गये है। अपने बुद्धि के परे बहुत कुछ घटित होता रहता है, भगवान एक बार ही हमें उसका आगाज कराते है।

सुबह मंदिर में दर्शन के लिये 3 घंटे की लाईन थी। नास्ता करके हमने प्रस्थान किया। आगे का सफर दिन के उजाले में था, यहाँ के सृष्टि सौंदर्य से रूबरू होने का वक्त मिला। क्या नजारे थे, बादलों के साथ चलना, पेड़ पौधे की विविधता निहारना, कई झरने, नदियां पार करना। सीधी चट्टानें पार करने के लिए यहाँ लोहे की सीढ़ियाँ बनी है, इन सीढ़ियों के सहारे ही हम आगे बढ़ पाते हैं। कल रात के अंधेरे में जब हम एक लोहे की सीढ़ी चढ़ रहे थे, तो समझ आया की वो सीढ़ी तो ऊपर

की तरफ से उखड़ चुकी है। बाजु की दूसरी सीढ़ी के सहारे हम चढ़े। आज दिन के उजाले में पता चला की उस सीढ़ी के बाजु में ही गहरी खाई थी। ऐसे समय कोई विपरीत घटना घटती तो नागद्वार नहीं बल्कि सीधे स्वर्गद्वार ही पहुँच जाते। आपसे निवेदन है की यदि यात्रा करने का मन हो तो कृपया दिन के उजाले में ही करें। यात्रा में सबसे आखिर में दम गढ़ नाम का पर्वत लगता है, वे अपने नाम पे खड़ा उतरा। आओ देखें जरा किसमें कितना है दम.... कहके सबको चिढ़ाता है और सबका दम निकालता है, आखिर जीतता भी तो वही है। सृष्टि के इतने करीब शायद ही हम रह पाते है। सृष्टि के पंचतत्व आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी को करीब से जानने की। इस यात्रा के वापसी में सभी मंदिरो का दर्शन करके शाम को हम धूपगढ़ पहुंचे।

नागद्वार यात्रा मार्ग बड़ा ही दुर्गम इलाका है। कोरकू भाईयों से ही यह यात्रा संभव हो पाती है। पहाड़ी रास्ते पे 'सेवा-भगत' कह कर वे चलते है उस वक्त बाजू हो कर उनको आगे बढ़ने की जगह देनी पड़ती है. जिन पहाड़ियों पे हम अपने आप को संभाल नहीं पाते वहाँ कोरकू भाई भारी सामान उठाकर पहाड़ी पार करते है और तभी आने वाले श्रद्धालुओं की व्यवस्था हो पाती है। कोरकू भाई से जब कोई बहस करते दिखा तो ये पंक्तिया याद आ गयी। यहाँ कोई किसी को रास्ता नहीं देता, यहाँ कोई किसी को रास्ता नहीं देता, की मुझे गिराकर तुम संभल कर चल सको तो चलो......

पचमढ़ी में आने के बाद भी बरसात रुकी नहीं थी, रिमझिम सततधार चलती रही। ऐसे ही वातावरण में यात्रा अच्छे से होती है, नागद्वार की कठिन यात्रा में थकावट से लड़ने की वही असली ताकत है। जिंदगी के सफर में भी भगवान की कृपा हम सब पर सतत बरसती रहे यानी ज़िंदगी में आने वाले संकट से लड़ने की ताकत हम को मिलती रहे।

हरी-हर जिंदगी भर........

✦✧✦

गणेशजी का चित्र सुश्री सरिता द्वारा बनाए गया है।

सुश्री सरिता
डी.ई.ओ.

भारत की खोज......??

श्री रवि प्रिंस
लेखापरीक्षक

यूरोप में एक समय पूरा यूरोप राजधानी 'रोम' हुआ करता था। इसलिए यूरोप का साम्राज्य ''रोमन'' कहलाता था। पूरा साम्राज्य एक था और बड़ा शक्तिशाली था ।

उस समय यह लोग समुद्र के रास्ते अपने दक्षिण भारत आते और यहां से मसाले लेकर जाते। यूरोप एक ठंडा देश था, वहां उन्हें गर्म चीज चाहिए थी। जो उनके वहां हो नहीं रही थी और अपने दक्षिण भारत (केरल, तमिलनाडु) में ये चीज अच्छी मात्रा में हुआ करती थी। रोमन भारत से इलायची, काली मिर्च, लौंग एवं अन्य मसाले लेकर जाते। रोमन बड़ा साम्राज्य था, बड़े-बड़े जहाज भर के आता और यहां से अपना सामान (मसाले) लेता फिर वापस चला जाता। कई सालों तक इनका व्यापार अच्छे से चलता रहा ।

रोमन साम्राज्य वाले बहुत धनी थे। पहले दुनिया में व्यापार का यह नियम था कि एक समान दो, दूसरा सामान लो मतलब की ''वस्तु विनिमय''। रोमन वाले भारत से काली मिर्च, लौंग, इलायची लेकर जाते और कहते बदले में हमसे कांच की ग्लास ले लो, हम कांच के ग्लास बहुत अच्छे बनाते हैं। भारत वाले ने ग्लास लेने से मना कर दिया और कहा ''हम लेंगे तो सिर्फ सोना (Gold), सोने के अलावा और किसी चीज से व्यापार नहीं करते'' तो यूरोप वाले हमे देते सोना और बदले लेकर जाते मसाले।

एक इतिहासकार थे प्लिनी जो कहते थे कि ''पूरी दुनिया का सोना पूरी दुनिया में घूमता लेकिन भारत में जाकर गायब हो जाता हैं। भारत वाले लेते तो हैं लेकिन किसी को देते नहीं''।

उसी समय रोम में एक राजा हुआ था 'नीरो' और नीरो के बारे में एक प्रसिद्ध कथन हैं कि''जब रोम जल रहा था तब नीरो बांसुरी बजा रहा था।''

(कहा जाता है की नीरो एक बेफिक्र राजा था जब एक बार रोम में अकाल पड़ा हुआ था और जनता बेचारी भूखी त्राहिमाम त्राहिमाम कर रही थी। तब नीरो मजे कर रहा था, नीरो की पत्नी जो की दूध से नहाया करती थी, मिस्र से गुलाब के पत्ते मगाए जाते ताकि रानी गुलाब के पत्तों के साथ नहाया करेगी। तो जब नीरो की रानी गुलाब के पत्तों से नहा रही थी तब लोग भूख से मर रहे थे।)

जब रोम के राजा नीरो को ये बात पता चली की एक सोने से भरा जहाज अपने यहां से व्यापार करने जाता है और बदले में मसाले लेकर आता है। राजा ने विरोध करते हुए कहा ''तुम सबका दिमाग खराब है यह कौन-सा भुगतान संतुलन है मैं तुम लोगों की टांगे तोड़ दूंगा'' फिर भी रोम के व्यापारियों ने राजा को समझाया कि हमें मसाले (खास कर काली-मिर्च) चाहिए और उसके लिए जितना सोना चाहिए हम देंगे।

कालान्तर में रोमन साम्राज्य ज्यादा समय तक नहीं चला। 1453 ई. में रोमन साम्राज्य टूट गया पूर्वी

रोमन साम्राज्य और पश्चिमी रोमन साम्राज्य ।

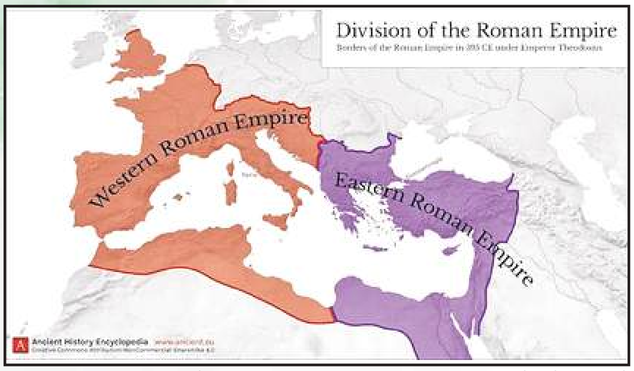

पश्चिम रोमन साम्राज्य की राजधानी तो रोम हुई और पूर्व की राजधानी बदलकर कुस्तुनतुनिया (आज का इस्तामबुल) हो गई। जब साम्राज्य टूटा तो पूर्वी रोमन के पास संसाधन बहुत कम हो गए और उनका व्यापार भारत के साथ खत्म होने लगा अब वह जल मार्ग से आने बंद हो गए। कारण ये था की छोटे व्यापारी उनके पास बड़ा जहाज नहीं, दूर आना जाना, अगर किसी व्यापारी को पूर्वी रोमन से भारत आना पड़े तो उसके पास बड़ा जहाज, बहुत सारे पैसे (वहां की मुद्रा), रास्ते में जहाज को कोई लूट न ले इसके लिए अपने सैनिक होने चाहिए। लेकिन यह संसाधन पूर्वी रोमन के पास थे नहीं । तब इन लोगों ने नए रास्ते से व्यापार शुरू किया 'स्थल मार्ग' दक्षिण भारत के स्थल मार्ग से वह उत्तर भारत जाते, उत्तर भारत से पाकिस्तान, पाकिस्तान से अफगानिस्तान, अफगानिस्तान से ईरान, ईरान से तुर्क और तुर्क से फिर पूर्वी रोमन पहुंच जाते। इस प्रकार इनका व्यापार स्थल मार्ग के रास्ते कुछ समय तक ही चला ।

पूर्वी रोमन एवं पश्चिमी रोमन दोनों जगह पर ईसाईयों का राज था। 1469 ई. के आस-पास पूर्वी रोमन पर तुर्कों द्वारा कब्जा कर लिया जाता हैं और जैसे ही तुर्कों ने पूर्वी रोमन पर कब्जा किया, उसने पूर्व से पश्चिम की ओर जो व्यापार होता था उनके स्थल मार्ग को बंद किया और पश्चिमी रोमन (आज का यूरोप) के ईसाइयों को धमकाया कि अगर पूर्वी रोमन की तरफ से काली मिर्च लेने आए तो एक भी जिंदा वापस नहीं जाएगा। इस प्रकार स्थल मार्ग के माध्यम से जो काली मिर्च पश्चिमी रोमन के पास जाती थी वह बंद हो चुका था। यूरोप में काली मिर्च की काफी मांग होने लगी, लेकिन करें भी तो क्या तुर्कों ने रास्ता ही बंद कर दिया था।

स्पेन (पश्चिमी रोमन 'यूरोप' का एक शहर) की बात है। एक दिन स्पेन में एक लड़का ऑमलेट खा रहा था और अपनी मां से कहता कि ''कैसा ऑमलेट बनाकर लायी हो, खाया ही नहीं जाता, उल्टियां होती है, कुछ स्वाद ही नहीं है इसमें''मां ने उसको वापस जवाब दिया इतना ज्यादा स्पाइसी (Spicy) खाना है तो जाकर इंडिया (भारत) ढूंढ ले। उस लड़के को मां की बात दिल पर लगी और मन में इंडिया (भारत) जाने की ठान ली।

उन दिनों स्पेन की रानी ''इसाबेला'' हुआ करती थी और इसाबेला ने घोषणा कर रखी थी कि जो कोई इंडिया (भारत) जाएगा उसको मैं जहाज दूंगी, ढेर सारे पैसे दूंगी। सिर्फ वह इंडिया जाए और वहां से काली मिर्च लेकर आए। वह लड़का रानी के पास गया और इंडिया जाने के लिए सहमति जताई। रानी ने लड़के को जहाज और पैसे दिए और निर्देश दिया कि इंडिया ढूंढो और काली मिर्च लेकर आओ। उस लड़के को बस इतना पता था कि इंडिया के लोग काले होते हैं। वह अपने जहाज में चढ़ा और समुद्र में जहाज चलता रहा, चलता रहा, चलता रहा। अचानक एक बंदरगाह पर उसे कुछ काले लोग नजर आए और लड़का खुशी से चिल्लाने लगा ''हम इंडिया आ गए''।

फिर वहां के लोगों ने लड़के को समझाया कि तुम पश्चिम की ओर आ गए हो, इंडिया पूर्व की ओर है।लेकिन लड़के ने कहा अब जब यहां आ ही गए हैं तो अब से हम इसे वेस्टइंडीज (West India) बुलाएंगे क्योंकि मेरे लिए अब ये इंडिया ही हैं। 1492 ई. में इंडिया (भारत) ढूंढते-ढूंढते वह बन्दा अमेरिका ढूंढ गया और वह लड़का था ''क्रिस्टोफर कोलोम्बस''।

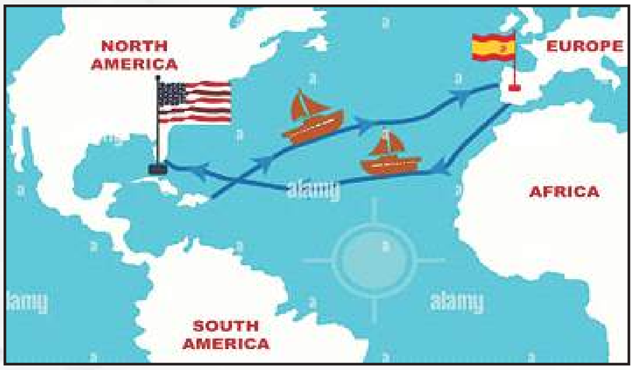

उसी समय काल में यूरोप का एक और देश पुर्तगाल वहां के राजा थे हेनरी और हेनरी ने भी घोषणा कर रखी थी कि जो कोई इंडिया ढूंढेगा उसको इनाम दिया जाएगा। पुर्तगाल और भारत के बीच एक महाद्वीप पड़ता है अफ्रीका। अफ्रीका महाद्वीप के सबसे नीचे छोर वाले समुद्र में तूफान बहुत ही भयंकर आते हैं इसीलिए यूरोप वाले जब भी आते थे वह ऊपर ऊपर से ही आगे चले जाते थे कभी भी नीचे नहीं जाते थे और नीचे वाले छोर (Tip) को स्टोर्म सी (Stromsea) बोलते थे। 1487 ई. की बात है, एक दिन एक पुर्तगाल यात्री अफ्रीका महाद्वीप के नीचे उतर गया और वह अफ्रीका महाद्वीप के सबसे निचले छोर तक पहुंच गया। किसी भी महाद्वीप के अंदर जो नीचे वाली छोर (Tip) को केप (Cape) बोलते हैं तो वह यात्री केप ऑफ स्टोर्म (Cape of Strom) पर पहुंच गया था।

वहां उसे एक जहाज मिला। जिस जहाज का कैप्टन अपने साथियों को आवाज लगा रहा था कि जल्दी-जल्दी सामान भरो हमें तुरंत भारत निकलना होगा। उस पुर्तगाली ने तुरंत जाकर कैप्टन से पूछा आप कहां से हो..?

कैप्टन – मैं भारत से हूं।
पुर्तगाली – भारत में कहां से हो..?
कैप्टन – गुजरात
पुर्तगाली – तुम बराबर इधर आते रहते हो..?
कैप्टन – बिल्कुल
पुर्तगाली – तुम मुझे इंडिया ले जा सकते हो...?
कैप्टन – बिल्कुल कभी भी ले जा सकता हूं।

बेचारा पुर्तगाली यात्री तुरंत पुर्तगाल जाकर बताया कि मैं इंडिया तो नहीं ढूंढा लेकिन वह केप (Cape) ढूंढा है जहां से हम इंडिया जा सकते हैं क्योंकि वहां पर हमेशा इंडिया वाले आते हैं। उस पुर्तगाली का नाम था ''बार्थो-लेम्यू-डियाज''। वहां के राजा ने पूछा- वह केप कौन-सी है? तो यात्री ने बताया वही केप जहां तूफान ज्यादा आते हैं 'कप ऑफ स्ट्रांम'...! राजा ने कहा- नहीं, वह वो केप है जहां से हमें इंडिया जाने की आशा नजर आई है आज से उसको ''केप ऑफ गुड होप'' (Cape of Good Hope) नाम से जाना जाएगा। वर्तमान में उसी केप पर एक शहर बसा हुआ है Cape Town, (South Africa).

अब दिक्कत यह थी की भारत की यात्रा पर कौन जाए? एक दिन राजा अपने महल में जब जा रहा था तब उसकी नजर एक गार्ड (सैनिक) पर पड़ी। राजा ने उस सैनिक से पूछा ''मैंने तुम्हें पहले कभी यहां नहीं देखा'' ।गार्ड ने राजा को सैल्यूट किया और बोला ''हे राजा ! पहले मेरे पिताजी इस गार्ड की नौकरी करते थे, अब वह रिटायर्ड हो गए हैं इसीलिए राज्य ने पिताजी के जगह मुझे नियुक्त किया है।''

राजा ने पुनः कहा ''तुम काफी हट्टे कट्टे, लंबे-चौड़े हो, तुम गार्ड की नौकरी क्यों कर रहे हो? क्या तुम अपने जीवन में कुछ अच्छा नहीं करना चाहते?

गार्ड ने वापस कहा 'आपने ठीक पहचाना मैं कप्तान बनना चाहता हूं'।

राजा ने उसे अलग बुलाकर पूछा 'पक्का तुम कप्तान बनना चाहते हो'?

गार्ड ने कहा- हां

राजा - क्या तुम्हे कोई लक्ष्य (Target) दिया जाए तो उसे पूरा करोगे?

गार्ड ने खुद कहा-यदि आप सोच रहे हो इंडिया भेजना तो मैं इंडिया जाना पसंद करूंगा ।

राजा ने उस गार्ड को चार जहाज दिए, दो तोपें दिए, कुछ सैनिक (लगभग 200) दिए और भारत के लिए रवाना होने का आदेश दिया। पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन से राजा ने घोषणा की ''लिस्बन के सारे चर्च में एक साथ घंटी बजाई जाएंगी, यह बन्दा जो भारत यात्रा पर जा रहा है इसके लिए दुआएं मांगी जाएगी कि वह इस यात्रा में सफल हो। उस बन्दे को निर्देश दिया गया जो कोई बीच आए उसे तोपों से उड़ा देना, लक्ष्य बस एक ही काली मिर्च आनी चाहिए''।

वह गार्ड वहां से केप ऑफ गुड हॉप पहुंचता है वहां उसे एक गुजराती भैया मिलते हैं- अब्दुल मलिक

अब्दुल मलिक उसको केरल लेकर आते हैं । वह गार्ड 20 मई 1498 ई. में भारत आने वाले रास्ते की खोज करता है और वह गार्ड था 'वास्को-डि-गामा' ।

राजा का एक गार्ड, राजा की तरफ से चार जहाज और दो तोपें लेकर रवाना होता हैं उसके आधे सदस्य बीच में ही मर गए थे, कोई तूफान में मरा, कोई मलेरिया से मरा, कुछ दूसरी बीमारी से मारा गया, कुछ रास्ते में लड़ाई में मारा गया । उसके बाद भी उसने हार नही मानी और भारत पहुंचा। उसके बाद उसने वहां से काली मिर्च लेकर पुर्तगाल पहुंचा। मान ले कि उसने काली मिर्च को केरल से ₹1 प्रति किलो में खरीदी थी, यूरोप में इतनी ज्यादा डिमांड थी कि ₹60 प्रति किलो में बिकी।

वास्कोडिगामा जब इंडिया आए तो उसे दो चीजे पता थी। वह दो धर्म के बारे में खूब अच्छे से जानता था एक तो वह खुद ईसाई था तो वह जानता था कि दुनिया में ईसाई धर्म के लोग होते हैं। दूसरी,वह जानता था कि दुनिया में मुसलमान होते हैं। क्योंकि

मुसलमान (अरब वालो के साथ) के साथ ईसाइयों की लंबे समय से लड़ाईयाँ चल रही थी। अरब में जो मुसलमान थे, वह टोपिया रखते थे। तो उसे लगा दुनिया में सारे मुसलमान टोपियां लगाते है।

जब वास्कोडिगामा केरल आया तो उसे टोपियों वाले नहीं दिखे, उसे लगा यहाँ मुसलमान तो नही है। और वह एक पत्र लिखता है- मैं जहा पर आज कल आया हूं यहां पर अपने जैसे लोग हैं और सारे के सारे ईसाई हैं और उसने कहा ''गजब की बात है यह क्राइस्ट की पूजा (ईसा मसीह) करते हैं और क्राइस्ट की मम्मी (मदर मैरी) की भी पूजा करते हैं पर अफसोस ये थोड़े रास्ते भटक गए हैं, ये मूर्ति पूजा करने लग गए हैं। ये भटके हुए ईसाई हैं''।

एक बार वास्कोडिगामा को एक भारतीय बुलाता है और उसे बताता है ''यह क्राइस्ट नहीं, ये कृष्णा है और यह मदर मैरी नहीं, ये हमारी माता दुर्गा है''। तब यूरोपियंस को यह पता चला कि इंडिया (भारत) में एक और धर्म है हिन्दू। उनको पता चला की हिंदुओं में भी कई सारे धर्म शाखाएं हैं विष्णु को जो माने वह वैष्णव, शिव को जो माने शैव, माताजी को जो माने है वह साख्य, जो इन तीनों को ना माने निर्गुण वह जैन और बौद्ध। इतना ही नहीं उसे यह भी पता चला कि यहां पर मुसलमान भी है पर टोपी वाले नहीं है। फिर उनको पता चला कि यहां पर सिख भी रहते हैं।

यूरोपियंस को किसी धर्म में अगर रुचि आई तो वह था बौद्ध धर्म। क्योंकि दुनिया में दो धर्म ऐसे है जिनका विस्तार हुआ था ईसाई और इस्लाम।दुनिया के तो ज्यादातर देश या तो ईसाई हैं या तो इस्लाम।तीसरा धर्म जो दुनिया में अगर फैला है तो वह है बौद्ध धर्म ''भारत, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, बर्मा, इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड, मंगोलिया, ताइवान, चीन, हॉन्गकोंग, मकाउ, जापान, कोरिया''जैसे देशों मे बौद्ध धर्म का विस्तार हुआ।

एक यूरोपीयन था 'अलेक्जेंडर कनिंघम' कनिंघम ने कहा ''बुद्ध ने युद्ध बंद कर दिए और अहिंसा की नीति अपना लिया। क्या ऐसा भी हो सकता है कि किसी व्यक्ति को इसीलिए मान सकते हैं क्योंकि उनके विचार बहुत अच्छे हैं। यदि ऐसा होता है तो उस महान व्यक्ति के बारे में जानना चाहिए वह एशिया को प्रकाश दिखाने वाला ज्योतिपुंज (लाइट ऑफ एशिया) है''।

बचपन से जो हम-आप पढ़ते आ रहे थे कि वास्को-डि-गामा ने भारत की खोज की। नहीं, वास्को-डि-गामा ने भारत आने वाले रास्ते की खोज की। हम शताब्दियों से थे, हम पहले भी थे, हम आज भी हैं और हम आगे भी रहेंगे। वो भारत आने वाले रास्ते भूल गए थे उन्होंने भारत आने वाले जलमार्ग की खोज की थी।

रचनाकार द्वारा घोषणा:- ''भारत की खोज..?'' रचना मैंने स्नातक के दौरान विश्व इतिहास में पढ़ा था। भारत की खोज को मेरे द्वारा रोचक कहानियों के माध्यम से पेश किया गया है ताकि इतिहास को जानने में रुचि बढ़ पाए।

✦✧✦

क्या कोई होगा?

सुश्री नीना वर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक अधिकारी

तप्त हृदयों पर स्नेह की ओस बरसादे
क्या ऐसा कोई होगा?
खामोशी में छिपा जो अनकहा दर्द समझ लें
क्या ऐसा कोई होगा?
उपदेशों से परे, सिर्फ मन की व्यथा सुने
क्या ऐसा कोई होगा?
माँ के सिवा बिना शर्त जो प्यार करे
क्या ऐसा कोई होगा?
जो भूलों, कमियों सहित अपना लें
क्या ऐसा कोई होगा?
धन, दौलत, ओहदे से परे जो सम्मान दे
क्या ऐसा कोई होगा?
जो जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार करें
क्या ऐसा कोई होगा?
जब हम खुद ही परिपूर्ण नहीं होते
तो क्यों दूसरों में पूर्णता तलाश करें
क्या ऐसा कभी होगा?

✦✧✦

रास्ते में अकेला

श्री रविन्द्र आर. ब्राम्हणकर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

अकेले रास्ते पर चलने को तैयार हूँ,
जिस रास्ते पर मैं अपनी मंजिल की तलाश में निकला हूँ।
रास्ते में अकेले डर के जंगल से गुजरेंगे,
आंसू की ठंड हटाने के लिए. रास्ते में अकेले संदेह की हवा महसूस होगी,
इनसे छुटकारा पाने के लिए बादलों की ओर देखेंगे,
रास्ते में अकेले ही खुशियों का दरिया पार करेंगे,
जोर से चिल्लाकर हवा में उछल जाएगा।
ऊँचे-नीचे पर्वतों पर चढ़ जाऊँगा।
विजय स्वर्ण मुकुट पहनने के लिए,
रास्ते में अकेले ही प्रकृति के पहलुओं से गुजरेंगे,
रहस्य जीवन खजाने को समझने के लिए।
सर्वश्रेष्ठ के लिए पथ पर अकेले चल रहे हैं, अंतिम विश्राम तक नहीं रुकेंगे।
मैं जानता हूं कि यह सर्वशक्तिमान ईश्वर की परीक्षा है,
यह मेरी अंतिम खोज होगी।

✦✧✦

सुविचार (संकलन)

श्री मंगेश टोंगो
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

- नियत साफ और मक़सद सही हो तो यकीनन किसी ना किसी रूप में ईश्वर भी आपकी मदद करते हैं।
- जीवन में कभी भी अपने आप को किसी से हीन या श्रेष्ठ भी न समझें, क्योंकि श्रेष्ठता अहंकार पैदा करती है और हीनता आत्मविश्वास को कम कर देती है।
- अपने सर्वोत्तम गुणों का प्रदर्शन करें तो कोई भी आपको नजरअंदाज नहीं करेगा।
- जमीन की खुदाई से प्राप्त होने वाले सोने से ज्यादा विचारों की खुदाई से ज्यादा सोना प्राप्त होता है।
- दर्द हमेशा क्षण भंगुर होता है, लेकिन लड़ाई से भागना आपको जीवन भर के लिए दर्द दें सकता है।
- जीवन में चाहे कितनी भी बुरी घटनाएँ घटें, अच्छा व्यवहार कभी न छोड़ें, विजय सत्य की ही होती है।
- महान लोग सदैव स्वयं की खोज में रहते हैं। जिस ज्ञान से मनुष्य स्वयं को जान सके वही सच्चा ज्ञान है।
- किसी को हराना बहुत आसान है लेकिन किसी का दिल जीतना बहुत मुश्किल है।
- दुनिया की नजर आप के लिये कभी स्थिर नहीं होंगी इसलिए अपनी नजरों में महान बनो।
- कुछ बातें, कुछ यादें और कुछ लोग कभी भुलाये नहीं जा सकते।
- जिंदगी एक खूबसूरत सफर है, हर दिन को एक नये अध्याय के रूप में जियें।
- किसी की मदद करने के लिए पैसों की नहीं बल्कि बड़े दिल की जरूरत होती है।
- किताबों के साथ-साथ लोगों को भी पढ़ें, किताबें ज्ञान देंगी और लोग अनुभव ।
- समय ख़त्म होने से पहले हर पल को जी लें, बाद में याद आती है, समय नहीं हैं।
- अपनी ताकत का परिचय तब देना, जब सामने वाला हल्के में लेने लगे।
- जिंदगी एक खूबसूरत कविता है, जिसकी हर पंक्ति में एक नया अर्थ छिपा है। अपने जीवन की कविता को सुंदर बनाएं।
- जीवन का हर पल एक अनमोल रत्न है, इसलिए हर पल का आनंद लें।
- अपना ख्याल रखना बहुत जरूरी है क्योंकि आप जैसा इंसान इस दुनिया में दोबारा नहीं आएगा।
- जिंदगी की किताब कितनी भी पुरानी क्यों न हो, यादों के पन्ने वैसे ही रहते हैं।

- हमेशा अपने आप से कहते रहें कि यह समय बीत जाएगा।
- किसी अयोग्य व्यक्ति को उससे अधिक सम्मान दिया तो वह हमें तुच्छ समझने के लिये आगे पीछे नहीं देखता।
- लोग क्या कहते हैं उससे ज्यादा महत्वपूर्ण है हमारा मन क्या कहता है..!
- इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोग आपको किस तरह से देखते हैं, फर्क इससे पड़ता है कि, आप खुद को किस तरह से देखते हैं।
- कुछ चीजें देर से आती हैं लेकिन सबसे अच्छी मिलती हैं।
- जो लोग चेहरे पर नफरत करते हैं उन्हें बर्दाश्त किया जा सकता है, लेकिन जो लोग अपने होने का दिखावा करते हैं वे अधिक खतरनाक होते हैं।
- हमारा अस्तित्व हमारे कर्म से है किसी के नज़रिये से नहीं।
- केवल दिखने में सुंदर होना उपयोगी नहीं है, व्यक्ति को मन और सोच से भी सुंदर होना चाहिए।
- छाया देने वाले कभी भी बदले में किसी चीज की उम्मीद नहीं करते, चाहे वह पेड़ हो या माता पिता।
- हमेशा उसके प्रति वफादार रहें जो कभी आपके लिए अपना समय देखते नहीं।
- जो व्यक्ति जीवन में जितने अधिक अनुभव प्राप्त करता है, वह उतना ही समझदार हो जाता है।
- हमारे सामने सराहना हमारी प्रशंसा है और हमारे पीछे प्रशंसा हमारा अस्तित्व है।
- मैदान में हारा हुआ व्यक्ति दोबारा जीत सकता है लेकिन मन से हारा हुआ कभी नहीं जीत सकता।
- पीछे हटने वाला हमेशा गलत नहीं होता, वह पीछे हट जाता है क्योंकि वह रिश्तों को अपने अहंकार से अधिक महत्व देता है।
- हमें थोड़ा बहुत बर्दाश्त करना सीखना चाहिए, क्योंकि हममें भी बहुत सी कमियाँ हैं जो दूसरे लोग बर्दाश्त कर लेते हैं।
- दिमाग ठंडा हो तो फैसले गलत नहीं होते, और भाषा मीठी हो तो अपने दूर नहीं होते।
- फिर से प्रयास करने से कभी मत घबराना क्योंकि, इस बार शुरुआत शून्य से नहीं अनुभव से होगी।
- जो सुख में साथ दे वो रिश्ते होते है और जो, दुःख में साथ दे वो फ़रिश्ते होते है। दुनिया में हर इंसान अलग है इसलिए जो जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार करना सीखे। अपनी नजर सिर्फ उसी चीज़ पर रखो जिसे तुम पाना चाहते हो, उस पर नहीं जिसे तुम खो चुके हो।
- ये दुनिया है यहाँ सबको सब कुछ नजर आता है, सिवाय अपनी गलतियों के।
- दो तरह से देखने से चीज़े छोटी नजर आती है, एक दूर से और एक गुरुर से।

✦✧✦

बचपन

सौ. प्रिती रविन्द्र ब्राम्हणकर
पत्नी श्री रविन्द्र ब्राम्हणकर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक बचपन का जमाना था,
जिस में खुशियों का खजाना था..
चाहत चाँद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दिवाना था..

खबर ना थी कुछ सुबह की,
ना शाम का ठिकाना था..
थक कर आना स्कूल से,
पर खेलने भी जाना था...

माँ की कहानी थी,
परियों का फसाना था..
बारीश में कागज की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था...

हर खेल में साथी थे,
हर रिश्ता निभाना था...
गम की जुबान ना होती थी,
ना जख्मों का पैमाना था..

रोने की वजह ना थी,
ना हँसने का बहाना था..
क्यूँ हो गए हम इतने बड़े,
इससे अच्छा तो वो बचपन का जमाना था।

✦✧✦

धर्म की श्रेष्ठता

श्री यशांक अडामे
पुत्र - श्री बाळकृष्ण अडामे
सहायक पर्यवेक्षक

एकमात्र धर्म ही सबसे महान और श्रेष्ठ है। सच तो यह है की यह मृत्यु के बाद भी साथ जाता है। शरीर के उपभोग में आने वाली अन्य जितनी वस्तुएँ हैं, वे सब नष्ट हो जाती है! जिनके लिए विनय (प्रेमभाव) ही पगड़ी-रूप में मुकुट है। सत्य और धर्म ही कुड़ल है। तथा त्याग की कवच की तरह है उसे जड़ आभूषणों की क्या आवश्यकता है?

मनुष्य के भरे हुए शरीर को मिट्टी के ढेले में दबोचा जाता है और लकड़ियों तथा कुछ के समान पृथ्वी पर फेंक कर उसके बंधू-बांधव विमुख होकर चल देते हैं। केवल धर्म ही उसके पीछे-पीछे जाता है।

अर्थ और काम भी यदि धर्म से रहित हों तो, उन्हें त्याग देना चाहिए, क्योंकि धर्म से अर्थ काम आदि सभी सुख प्राप्त हो जाते है।

अतः विधिपूर्वक पालन किया हुआ धर्म ही सबसे श्रेष्ठ है। इसलिए ध्येय (उद्देश्य) का आश्रय लेकर धर्म का ही आचरण करना चाहिए। यह मानव की चंचल श्वास क्षणभर में सैकड़ों बार आता-जाता है, जीवन उसी के अधीन है। ऐसे क्षणिक जीवन में आसक्तचित होकर विलम्ब कौन करेंगा? धर्म ने मानव समाज को विविध समाज में बांटा है।

✦✧✦

छोरी

सुश्री यशी श्रीवास्तव
कनिष्ठ अनुवादक

हिंदी के कुछ राज्यों की बोलचाल में प्रयुक्त होने वाला शब्द 'छोरी' अपने आप में एक अनोखी पहचान रखता है। यह शब्द विशेष रुप से उत्तर भारत में राजस्थान, हरियाणा और मध्य प्रदेश के कुछ ग्रामीण इलाकों में प्रचलित है। छोरी शब्द का अर्थ सामान्य रुप से 'लड़की' होता है, लेकिन इसके प्रयोग और संदर्भ के अनुसार अलग-अलग भाव हो सकते हैं।

छोरी शब्द जितना सरल लगता है, उतना ही इसमें गहराई और भावनात्मक जुड़ाव भी है। कुछ स्थानों पर छोरी शब्द को प्यार और दुलार के रुप में भी प्रयोग किया जाता है। माता-पिता या बड़े बुजुर्ग जब किसी लड़की को स्नेहपूर्वक बुलाते है तो, यह शब्द आत्मीयता को दर्शाता है। कई बार दोस्त या परिचित, आपसी बातचीत में छोरी शब्द का प्रयोग हल्के-फुल्के अंदाज में भी करते है। राजस्थान और हरियाणा में यह शब्द संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। लोकगीतों, फिल्मी गानों और कहावतों में छोरी शब्द का खूब प्रयोग होता है।

इन सब के अलावा छोरी शब्द सुनते ही दिमाग में एक छवि उन पिछड़ी ग्रामीण क्षेत्र की लड़कियों की भी बनती है, जिन्हें समाज में हर तरह की पाबंदियों में जकड़ा हुआ रखा गया है। यह शब्द मन में उन लड़कियों की भी छवि बनाता है जिन्हें लंबे समय तक समाज में रुढ़ियों और भेदभाव का सामना करना पड़ा। कुछ हद तक यह सत्य भी है कि पहले के समय में लड़कियों को घर की चारदीवारी तक सीमित रखा जाता था। उन्हें शिक्षा और करियर के अवसरों से दूर रखा जाता था। समाज में यह धारणा थी कि लड़कियों का मुख्य कर्तव्य केवल घर का काम संभालना और परिवार की देखभाल करना है।

राजस्थान और हरियाणा की गिनती उन राज्यों में होती है जहाँ लड़कियों की स्थिति काफी पिछड़ी हुई थी। समाज में उन्हें घरेलु कार्यो तक सीमित रखा जाता था, और उन्हें शिक्षा एवं रोजगार के अवसर नहीं दिए जाते थे। लड़कियों की कम उम्र में शादी, दहेज प्रथा, घूँघट प्रथा और पुरूष प्रधान समाज की अन्य प्रथाएँ उनकी स्वतंत्रता में बाधा डालती थी। हरियाणा में लिंगानुपात की समस्या भी गंभीर रही है, जहाँ बेटों को प्राथमिकता दी जाती थी। लेकिन बीते कुछ दशकों में छोरियों या लड़कियों की छवि एवं स्थिति में बहुत बदलाव आया है। आज की लड़कियाँ न केवल शिक्षित और आत्मनिर्भर बन रही है, बल्कि हर क्षेत्र में अपनी सफलता का परचम लहरा रही है। वे किसी भी मामले में लड़कों से कम नही है, बल्कि कई बार तो उससे आगे भी निकल जाती है।

बॉलीवुड के प्रसिद्ध डायलॉग – 'मारी छोरियाँ छोरों से कम है के' ने छोरी शब्द को और भी लोकप्रिय बना दिया। यह बात बिल्कुल सही भी है यह शब्द बदलते समय के साथ नारी सशक्तिकरण का प्रतीक भी बन चुका है। आज की छोरी आत्मनिर्भर है और हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही है – चाहे वह खेल हो, शिक्षा, विज्ञान, सेना या फिर व्यवसाय। अगर कोई उस डायलॉग में कही गई बात को मजाक में लेता है, तो वह शायद हकीकत से अनाजन है। वह डायलॉग ने केवल एक फिल्मी संवाद है, बल्कि समाज में लड़कियों की बराबरी और उनके योगदान को रेखांकित करने वाला एक महत्वपूर्ण संदेश भी है।

सरकार और समाज के प्रयासों से अब लड़कियाँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाओं ने हरियाणा में शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ाई है। राजस्थान में भी लड़कियों के लिए विशेष छात्रवृत्तियाँ और शिक्षा योजनाएँ लागू की गई है। हरियाणा की बेटियों ने खेलों में देश को गर्व महसूस कराया है। साक्षी मलिक (कुश्ती), विनेश फोगाट (कुश्ती) और मनु भाकर (शूटिंग) जैसी लड़कियों ने ओलंपिक और अन्य अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक जीते है। अब महिलाएँ राजनीति और प्रशासन में भी अपनी पहचान बना रही है। महिलाएँ इन राज्यों में मुख्यमंत्री, सरपंच एवं अन्य प्रशासनिक पदों पर भी चुनी जा रही है। अब लड़कियाँ केवल नौकरी तक सीमित नही है, बल्कि वे खुद की कंपनियाँ और स्टार्टअप भी चला रही हैं।

यह सत्य है कि आज की छोरी किसी से कम नही है। वह अपने हक के लिए लड़ रही है और अपने सपनों को पूरा कर रही है। हालाँकि, समाज में अभी भी कुछ चुनौतियाँ बनी हुई है, लेकिन जागरुकता और सकारात्मक प्रयासों से यह बदलाव और तेज होगा। आने वाले समय में हरियाणा और राजस्थान जैसे राज्यों की छोरियों यानि लड़कियों को कई अवसर देने ही होंगे जिनसे वह देश और दुनिया में अपनी विशेष पहचान बनाएँगी।

लक्ष्य को ही अपना जीवन कार्य समझो, हर समय उसका चिंतन करो उसी का स्वप्न देखो और उसी के सहारे जीवित रहो।

– स्वामी विवेकानन्द

आत्मनिर्भर भारत

सुश्री नयना कुमारी इस्सर
कनिष्ठ अनुवादक

''सर्व परवशम् दुःखम् सर्वमात्मवशं सुखम्।''

अर्थात दूसरों के वश में रहना दुःखदायी है परंतु अपने जीवन के समस्त पक्षों पर स्वयं नियंत्रण रखना सुख की अनुभूति देता है। यही आत्मनिर्भरता का मूल मंत्र हैं जो किसी भी अवस्था में भारतीय दर्शन एवं संस्कृति के लिए नए नहीं है। प्रारंभ से ही भारत विश्व गुरू की भूमिका में इसलिए रहा क्योंकि वह सदैव आत्मनिर्भर था, चाहे वह सिन्धु सभ्यता हो या मौर्य, गुप्त, चोल, आदि वंशों कके नेतृत्व में हो। औपनिवेषिक काल में भारत के इसी स्वावलंबन अथवा आत्मनिर्भता पर प्रहार किया गया जब लघु-कुटीर उद्योग बद हुए, शिल्प को हतोत्साहित किया गया। यहाँ की विकसित सभ्यता पर प्रहार हुआ और अर्थव्यवस्था की रीढ़ को तोड़ने का प्रयास किया गया और भारत पराश्रित बन गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत पुनः अपने पैरों पर खड़ा हुआ और अपने पुराने वैभव को प्राप्त करने की ओर कदम बढ़ाने लगा। 1991 में वैश्वीकरण का दौर आया तो भारत भी विश्व स्तर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर बढ़ा और विकसित देशों के साथ परस्पर भागीदारी बनाने में सक्षम हुआ और विकास के नए द्वार खुले।

2019 में कोरोना महामारी के आतंक से पूरे विश्व की आर्थिक संरचना धराशायी हो गई। आयात-निर्यात पर निर्भर धंधे ठप्प पड़ गए, उत्पादन, तकनीक, बाजार सभी बंद पड़ गए। भारत अपनी रोजमर्रा की लघुतम चीजों से लेकर उद्योग एवं तकनीकी क्षेत्रों के दीर्घतम जीजो के लिए चीन, अमेरिका, रूस, आदि देशों पर निर्भर था। भारत समेत हर देश को यह आभास हुआ कि ऐसी स्थिति में जहाँ आयात-निर्यात तो क्या सामान्य आवागमन भी बंद हो गया, वहाँ वे अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए किसी अन्य देश पर निर्भर नही हो सकते। भारत में पहली बार तब ''Global to Local'' की अवधारणा बनी यानि विकेन्द्रीकरण की ओर उसका ध्यान गया। इसी दौरान चीन के साथ भारत के सीमावर्ती विवध ने भी तेजी पकड़ी। इन्हीं कारणों से भारत ने किसी और पर निर्भर न होकर स्वयं को सक्षम बनाने की ओर मजबूत कदम बढ़ाए और इसको एक पुष्ट रूप देने हेतु 12 मई 2020 को प्रधानमंत्री जी ने आत्मनिर्भर भारत अभियान की घोषणा की जिसके तहत 20 लाख करोड़ रुपयों के आर्थिक पैकेज की घोषणा की गई ताकि देश में स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा मिल सके और उसकी Supply Chain बन सके।

आत्मनिर्भर भारत अभियान के कुल पाँच स्तंभ माने गए -

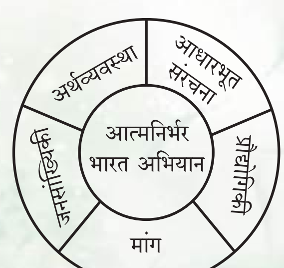

आत्मनिर्भर भारत का मुख्य उद्देश्य था लॉकडाऊन के दौरान देश के किसानों, मजदूरों की आर्थिक मदद कर बेरोजगारी को हटाना, लघु एवं मध्य कुटीर उद्योग (MSME) को प्रोत्साहित करना, आधुनिक निर्माण एवं उत्पादन का विकास अपने ही देश में करना जिससे अन्य देश पर निर्भर न रहना पड़े। इनके सहारे विनिर्माण एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र विकसित कर विश्व स्तर पर भारत की उपस्थिति दर्ज कराना। इसके अतिरिक्त इस बार पर विशेष जोर दिया गया कि भविष्य में भी यदि कोरोना के समान कोई स्थिति आए तो भारत उससे स्वयं निपटने में सक्षम हो।

इस अभियान को सफल बनाने के लिए सरकार द्वारा कुछ ठोस कदम उठाए गए। नए उद्योग की स्थापना और संचालन के कानूनों को सरल किया गया ताकि नए उद्यमों को प्रोत्साहन मिले। ''Made in India'' को बढ़ावा दिया गया ताकि छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी वस्तु का निर्माण भारत में ही हो और इसके साथ इस बात का भी ध्यान रखा गया कि विकेन्द्रीकरण के जरिए Supply Chain पादर्शी एवं सबल हो जिससे देश की मांग की पूर्ती हो सके। साथ–ही–साथ One One के माध्यम से सार्वजनिक वितरण प्रणाली का एकीकरण भी किया गया। साथ ही कृषि क्षेत्र के विकास पर बल दिया गया।

इस सभी कदमों द्वारा भारत की अर्थव्यवस्था को एक ऊंचाई पर पहुँचाने का प्रयास किया गया। कोरोना जैसी महामारी ने जहाँ दुनिया को आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाया वहीं भारत ने न केवल इसके महत्व को समझा बल्कि इस प्रतिकूल परिस्थिति को भी इस अभियान के द्वारा एक अवसर के रूप में परिवर्तित कर दिया। एक ऐसा अवसर जिसमें भारत ने अपने समस्त संसाधन, श्रमशक्ति, ऊर्जा को समेटकर उसे एक सकारात्मक अभियान में लगाया जिसने भारतीय अर्थव्यवस्था की ऊँची उड़ान भरने में ईंधन प्रदान किया। यह अभियान गाँधीजी के स्वावलंबी भारत की संकल्पना को साकार करने का प्रयास है। जिस स्वप्न की शुरूआत गाँधीजी ने चरखे से सूत काटकर की थी उसे आज भारत विश्व की पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर देश बनकर साकार करने की ओर अग्रसर है।

✦✧✦

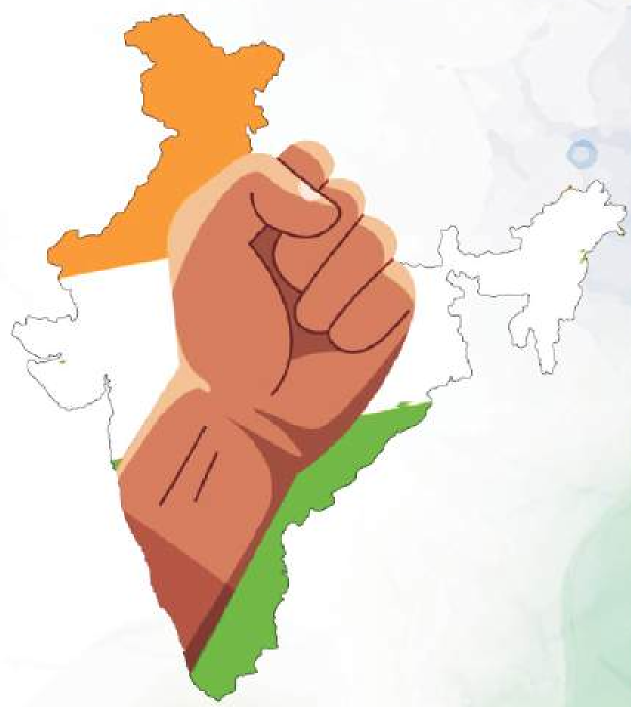

शत्रु का लोहा भले ही गर्म हो जाए, पर हथौड़ा तो ठंडा रहकर ही काम दे सकता है।

- सरदार पटेल

कार्यालय में आयोजित हिंदी पखवाड़ा–वर्ष 2024 की झलकियाँ

हितार्थ सत्यनिष्ठा

कार्यालय में आयोजित ऑडिट दिवस-वर्ष 2024 की झलकियाँ

COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL (CAG) OF INDIA

COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL (CAG) OF INDIA

कार्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक की झलकियाँ

हिंदी कार्यशाला–वर्ष 2024-25

आपके पत्र

सं.स्था./XIII(14)/विविध पत्रिकाएँ/भाग-III/2023-24

/464675/2023

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग)
मुंबई शाखा, नव भवन, आर के मार्ग, बल्लार्ड इस्टेट, मुंबई
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Director General of Audit (Environment and Scientific Departments)
Mumbai Branch, Nav Bhavan, R. K. Marg, Ballard Estate, Mumbai-400 001
Contact No.: 022-2082-3903/ 2146/ 4609, Fax: 022-2263-2414

सं.स्था./XIII(14)/विविध पत्रिकाएँ/भाग-III/2023-24/ दिनांक

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी,
ए.जी. लेखापरीक्षा-II
नागपुर, महाराष्ट्र

विषय: हिन्दी पत्रिका "रश्मि" के 36वें अंक की ई-प्रति की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय के संदर्भ में आपके कार्यालय पत्र ईमेल दिनांक 28.11.2023 को संज्ञान में लें। इस संबंध में आपके कार्यालय से हिन्दी पत्रिका 'रश्मि' के 36वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए यह कार्यालय आपका आभारी है।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। बिरजू हकीम का हुनर, अपना भाग्य तुम स्वयं बनाओ, कोरा पन्ना, मैं गंगा हूँ, मन की शांति आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं रुचिकर हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन

Signed by Sudeb Sikde
Date: 12-12-2023 14:22
Reason: Approved

कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल
Office of the Accountant General
(Audit-II), West Bengal

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/ 133 दिनांक- 05/12/2023

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II,
लेखापरीक्षा भवन, नागपुर,
महाराष्ट्र -440001

To,
Hindi Officer,
Office of The Accountant General (Audit)-II,
Lekhapariksha Bhovan, Nagpur,
Maharashtra-440001

विषय: हिंदी गृह पत्रिका 'रश्मि' के 36वें ई-अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका, 'रश्मि' के 36वें ई-अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। सर्वप्रथम कार्यालय को वर्ष 2021-22 में नराकास समिति (का.-1) द्वारा गृह पत्रिका 'रश्मि' के लिए द्वितीय पुरस्कार पाने पर विशेष बधाई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा सुंदर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी सुंदर हैं। पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु पत्रिका परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। कविता की श्रेणी में सुश्री नीना वर्मा कृत "नारी", सुश्री नीलम देवी कृत "मैं गंगा हूँ" एवं लेख की श्रेणी में श्री तसीम मिन्हास कृत "परोपकार", सुश्री मोनिका सोनी कृत "जल संकट का सामना करता विश्व" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

सामान्य - 216
नस्ती (13.12.23)

भवदीय,
हिं. अधिकारी 05/12/23
व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्ट लेक,कोलकाता- 700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata - 700 064.
Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2337-7854, e-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

---

सं.-हि.क./प्रशंसा पत्र/ वॉल -I /131/23-24 :
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
एनेक्सी बिल्डिंग, रेस कोर्स रोड
गुजरात, राजकोट – 360001
दिनांक:- 24.01.24

सेवा में
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
नागपुर, महाराष्ट्र

विषय:- हिन्दी गृह पत्रिका "रश्मि" के 36 वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका "रश्मि" के 36 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर परोपकार, जीवन की किताब, मन की शांति, प्लास्टिक: खतरे में भविष्य, बचपन और बिरजु हकीम का हुनर आदि रचनाएं उल्लेखनीय एवं सराहनीय है।

यह हिन्दी पत्रिका कार्यालय की साहित्यिक प्रतिभा को निखारने में एक सशक्त मंच प्रदान करता है यह इसी प्रकार से राजभाषा हिन्दी की प्रगति में अपना अमूल्य योगदान देता रहे, पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारो एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

संजय कुमार
हिंदी अधिकारी

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,पर्यावरण
एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस,
ए.जे.सी. बोस रोड 234/4, कोलकाता-700020
फोन: ,033-2289/4111/12/13फैक्स: 033-2289-4060
ई मेल:-bresdkolkata@cag.gov.in
दिनांक:-31-01-2024

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II महाराष्ट्र,
लेखापरीक्षा भवन,
पीओ सं.-220, सिव्हिल लाईन्स
नागपुर,
महाराष्ट्र-440001

विषय:- हिंदी ई-पत्रिका "रश्मि" के 36वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "रश्मि" के 36वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर ईशी सिन्हा का आलेख **'निरंतरता'**, राजेश कुमार कटरे का आलेख **'बिरजू हकिम का हुनर'**, आर.के. धौबे का आलेख **'धर्म की प्रासंगिकता**, यशी श्रीवास्तव का आलेख **'बचपन'**, वाई.के दीपक की कविता **'कोरा पन्ना'** और नीना वर्मा की कविता **'नारी'** अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र है। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "रश्मि" इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

भवदीया,

हिंदी अधिकारी

सामान्य - 253 / नस्ती
07/02/24

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई
O/o the DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL) MUMBAI
C-25 Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex, Mumbai - 400051
e-mail – pdcecentralmumbai@cag.gov.in

पत्रांक:म.नि.ले.प./कें/रा.भा.अ./पत्रिका/ 72 दिनांक: 18-12-2023

सेवा में

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) –II
महाराष्ट्र ,नागपुर

विषय- कार्यालयीन पत्रिका 'रश्मि ' के 36वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय/महोदया

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'रश्मि ' के 36वें अंक की प्राप्ति हुई ,एतदर्थ धन्यवाद ।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक , ज्ञानवर्धक , मनोरंजक ,पठनीय एवं सराहनीय हैं। निम्नलिखित कुछ रचनाएँ बंधन मुक्ति प्रशंसनीय हैं-

क्रम सं.	रचना/लेख	रचनाकार/लेखक(श्री/सुश्री)
1	कोरा पन्ना	वाई.के.दीपक
2	जिंदगी क्या है ?	रविन्द्र ब्राम्हणकर
3	मन की शांति	सुभाष निकम
4	मैं गंगा हूँ	नीलम देवी

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई ।पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

[हस्तलिखित: सामान्य-233 09.01.24 / नस्ती]

भवदीया

व.ले.प.अ./रा.भा.

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता – 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

सं. हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/पावती/233
दिनांक: 01.12.2023

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), महाराष्ट्र
नागपुर

विषय:- हिंदी गृह पत्रिका "रश्मि" के 36वें ई-अंक की पावती बाबत।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय का पत्रांक हिंदी अनुभाग/पत्र.क्र.18/रश्मि पत्रिका-36/जा.क्र.75, दिनांक 24.11.2023 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "रश्मि" के 36वें ई-अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा काफी सुंदर एवं आकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सराहनीय हैं। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

भवदीय,

[हस्तलिखित: 01/12/23]

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

प्रधान महालेखाकार (ले० व हक) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लाट नं० 4 व 5, सैक्टर 33-बी, चंडीगढ़-160020
टेलीफोन नं० 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं० 0172-2603824
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA, CHANDIGARH-160020 EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.: 0172-2603824
E mail- agaeharyana@cag.gov.in

हिंदी कक्ष/पत्रि.प्रति./2023-24/214
दिनांक: 08.12.2023

सेवा में

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार लेखापरीक्षा II
नागपुर, महाराष्ट्र ।

महोदय/महोदया,

विषय : हिंदी गृह-पत्रिका 'रश्मि' के 36वें अंक की ई-प्रति के प्रेषण के संबंध में ।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 24.11.2023 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह-पत्रिका 'रश्मि' के 36वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं । पत्रिका में समाविष्ट सुश्री मोनिका सोनी का लेख 'जल संकट का सामना करता विश्व', श्री वाई. के. दीपक का लेख 'कोरा पन्ना' एवं श्री मयंक सोनी का लेख 'प्लास्टिक: खतरे में भविष्य' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं ।

इसके अतिरिक्त सुश्री नीलम देवी की कविता 'मैं गंगा हूँ' एवं सुश्री नीना वर्मा की कविता 'नारी' पठनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक) पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ 160017
O/o THE ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T. CHANDIGARH-160017
फैक्स - 0172-2703110, दू. सं. - 2702272, 2702072
क्रमांक - हिंदी कक्ष/सामान्य/10/2023-24/635
दिनांक -26/12/2023

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II,
महाराष्ट्र, नागपुर-440001

विषय - विभागीय हिंदी पत्रिका 'रश्मि' के 36वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'रश्मि' के 36वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

श्रीमती मोनिका सिन्हा की 'अपना आश्रय तुम स्वयं बनाओ', श्री वाई. के. दीपक की 'कोरा पन्ना', सुश्री नीना वर्मा की 'नारी', सुश्री नीलम देवी की 'मैं गंगा हूँ', श्रीमती नयना कुमारी इन्सर की 'जीवन की किताब' तथा श्रीमती प्रीति रविंद्र ब्राह्मणकर की 'खुशी' रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिं

[हस्तलिखित: सामान्य-225 दि. 03/01/2024 / नस्ती 03/01/24]

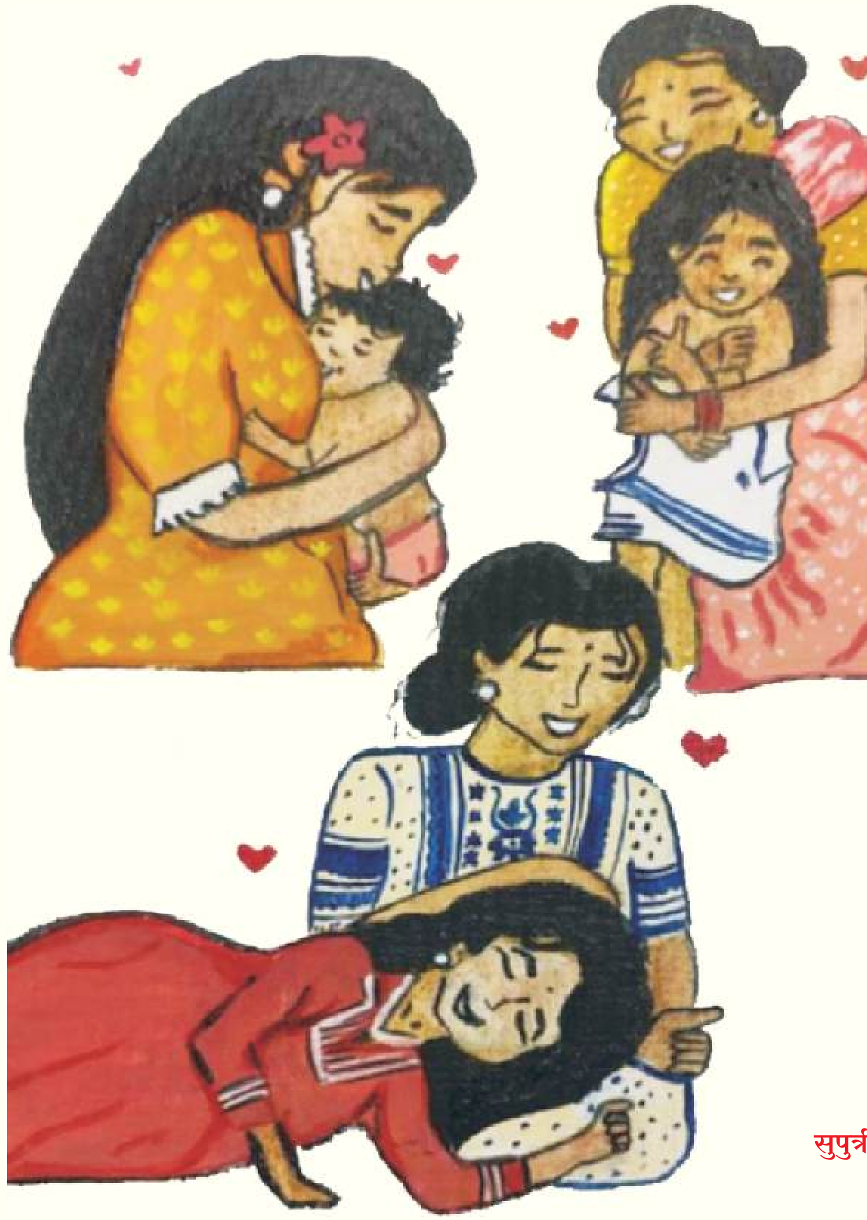

कु. प्रशिया शेलके
सुपुत्री - सुश्री शिबानी शेलके
स.ले.प.अ.

सुश्री नीलम राठी
माताजी सुश्री आकांक्षा राठी
आशुलिपिक

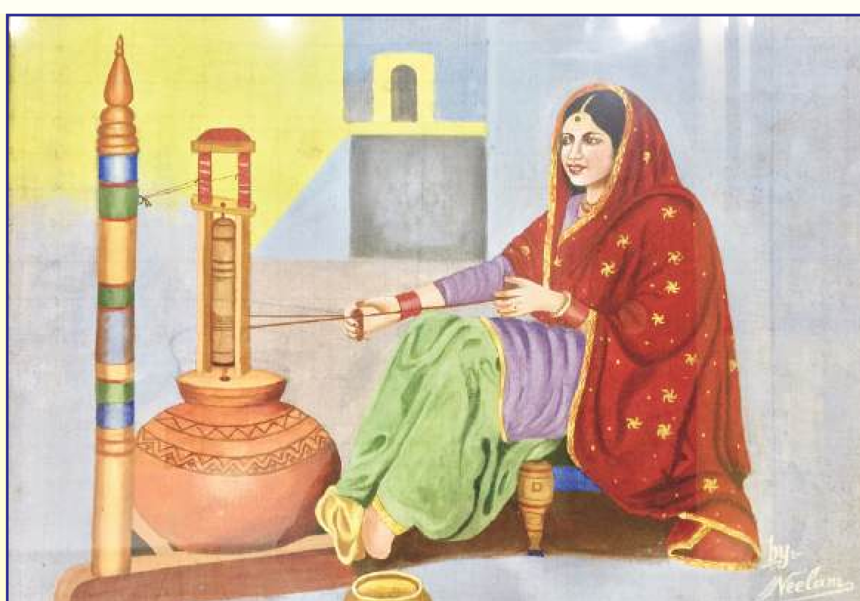

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest